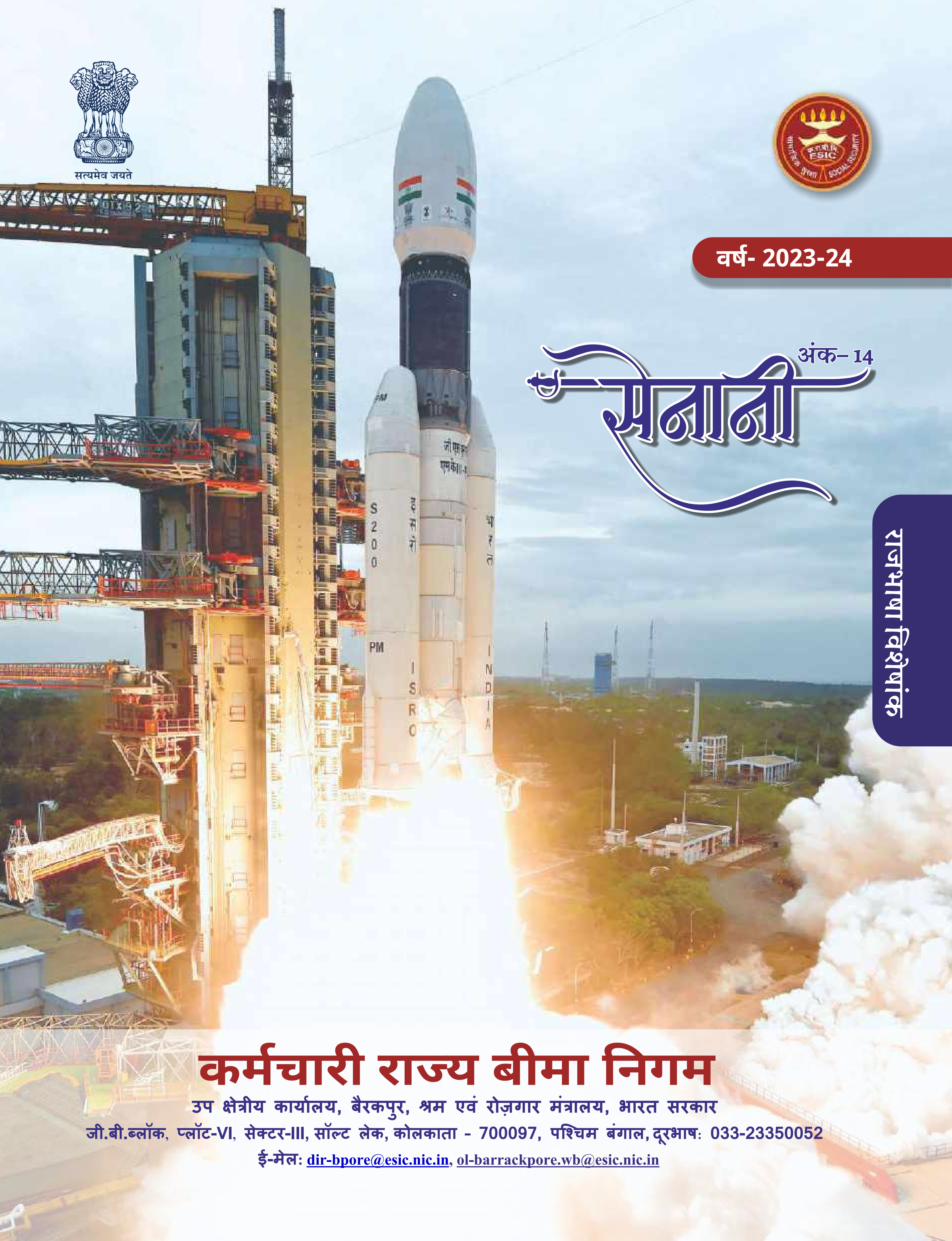

सत्यमेव जयते

वर्ष- 2023-24

अंक- 14

सेनानी

राजभाषा विशेषांक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700097, पश्चिम बंगाल, दूरभाष: 033-23350052

ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in, ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

हिन्दी पत्रिका प्रतियोगिता

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की हिन्दी गृह पत्रिका सेनानी (अंक 12) ने वर्ष 2021-2022 में क / ख / ग क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिकाओं में से संपादन, साज-सज्जा एवं सामग्री-प्रबंधन के लिए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

बीमा आयुक्त

मुख्यालय, नई दिल्ली
दिनांक: 22.06.2023

अंक– 14
सेनानी

वर्ष 2023-24, अंक – 14
(केवल आंतरिक परिचालन के लिए)

संरक्षक
श्री अमरनाथ तिवारी
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

प्रधान संपादक
श्री देबाशीष बरूआ
उप निदेशक

संपादक
श्री रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप संपादक
श्री पोलीकार्प सोरेंग
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

उप संपादक
सार्जेंट बिनय कुमार शुक्ल
(सेवानिवृत्त भा.वा.से.)
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सहायक संपादक
श्री भागीरथ साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय, भारत सरकार
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III,
सॉल्ट लेक, कोलकाता – 700097,
पश्चिम बंगाल
दूरभाष: 033-23350052
ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in,
ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

मुद्रक
भूषण स्टूडियो एंव प्रेस
पश्चिम बंगाल 743135, दूरभाष : 9331886129
ई मेल: braj.b.gupt@gmail.com

सेनानी' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादन समिति उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	संदेश / रचनाकार	पृष्ठ सं.
महानिदेशक का संदेश	डॉ. राजेंद्र कुमार	4
बीमा आयुक्त का संदेश	श्री प्रणय सिन्हा	5
बीमा आयुक्त का संदेश	श्री रत्नेश कुमार गौतम	6
संरक्षक की कलम से..	श्री अमरनाथ तिवारी	7
प्रधान संपादक की कलम से..	श्री देबाशीष बरूआ	8
संपादक की कलम से..	रमेश साव	9
राजभाषा कार्यान्वियन एवं प्रचार प्रसार का एक प्रयास	रमेश साव	10
चंद्रयान मिशन का अब तक का सफर	मणिशंकर पाणि	12
तकनीकी के संयोग के बिना भाषाओं का विकास और संवर्धन संभव नहीं है।	ओम अग्रवाल	14
कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक सुरक्षा कवच	पोलीकार्प सोरेंग	18
हाँ, हूँ मैं स्त्री	कंचन प्रसाद साव	19
कार्यालय की गतिविधियाँ		20
चित्र वीथिका		24
स्वास्थ्य ही धन है	सुब्रत अधिकारी	26
राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार	रमेश साव	27
रैगिंग: एक सामाजिक अपराध	अपूर्व कुमार घोष	28
अच्छी नहीं लगती	आशुतोष मिश्र	29
राजभाषा हिंदी ने लगभग दो लाख की जनसंख्या और तीन पीढ़ियों को गरीबी रेखा के नीचे जाने से बचा लिया	सार्जेंट बिनय कुमार शुक्ल	30
प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों के प्रति भावनात्मक विचार	मणिशंकर पाणि	32
नारी	संतोना घोष	33
महिला सशक्तिकरण	अन्वेषा सरकार	34
छोड़ना ही तो कठिन है	कौशिक बाला	35
"चलिए मुजफ्फरपुर..!!"	प्रियेश	36
इक बार तू कान्हा आ जा ना	रवि कहर	38
गरीबी	धर्मपाल कुमार	39
शब्दों का खेल	दिलशाद अली	40
कुछ यादें	अप्पू कुमार	41
कृष्ण भक्ति एवं इस्कॉन	असीम कुमार दास	44
विषयासक्ति व अनासक्ति का अंतर्द्वंद्व	भीमसेन कुमार	46
त्रिभाषा सूत्र	राजभाषा शाखा	49
प्रशासनिक शब्दावली	राजभाषा शाखा	50

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग,
नई दिल्ली-110002

डॉ. राजेंद्र कुमार

महानिदेशक का संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की गृह पत्रिका 'सेनानी' के चौदहवें अंक के प्रकाशन की खबर अत्यंत हर्ष का विषय है। ये गृह पत्रिकाएँ किसी भी कार्यालय के राजभाषा की गतिविधियों का स्पष्ट आईना होती हैं जिसमें कार्यालय के समस्त कार्मिक अपनी रचनाधर्मिता की प्रस्तुति के साथ ही राजभाषा हिंदी में काम करने और इसके कार्यान्वियन में अपने सक्रिय सहयोग की प्रस्तुति भी करते हैं। उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर की पत्रिका को देखने पर यह भी जान पड़ता है कि इस कार्यालय के अधिकारी और कार्मिक ही नहीं उनके परिवार वाले भी राजभाषा हिंदी के विकास में अपनी रचनाओं से सहयोग करते हैं। उनके इस कार्य में सहयोग देने की भावना के लिए बैरकपुर के कार्यालय प्रमुख, राजभाषा शाखा और समस्त अधिकारी गण भी साधुवाद के पात्र हैं।

बैरकपुर की गृह पत्रिका 'सेनानी' का पिछला संस्करण काफी आकर्षक एवं रुचिकर था। आशा है, यह संस्करण भी विविध आयामों से ओत-प्रोत, ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर होगा।

शुभकामनाओं सहित,

राजेन्द्र कुमार
(डॉ. राजेंद्र कुमार)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग,
नई दिल्ली-110002

श्री प्रणय सिन्हा

बीमा आयुक्त (का. एवं प्रशा.) का संदेश

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर से गृह पत्रिका 'सेनानी' का सतत प्रकाशन हो रहा है साथ ही इसे समय समय पर मुख्यालय सहित विभिन्न मंचों पर पुरस्कार भी प्राप्त हो रहा है। दिनांक 09 अगस्त 2023 को कोलकाता दौरे के दौरान मैंने उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों से चर्चा भी की। इस चर्चा में पाया कि कार्यालय के अधिकांश हिंदीतर कार्मिक राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिंदी पत्राचार में स्वेच्छा से रुचि ले रहे हैं तथा यही कारण है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर 'ग' क्षेत्र में होते हुए भी राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी अग्रणी है। आशा है कि पिछले संस्करणों की भांति ही यह संस्करण भी रुचिकर, ज्ञानवर्धक और आकर्षक होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(प्रणय सिन्हा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग,
नई दिल्ली-110002

श्री रत्नेश कुमार गौतम

बीमा आयुक्त (राजभाषा) का संदेश

यह जान कर अपार हर्ष हो रहा है कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गृह पत्रिका 'सेनानी' का प्रकाशन होने जा रहा है। मैंने विभिन्न कार्यालयों की पत्रिकाएं देखी पर जिस प्रकार से कोरोना काल के बाद से ही बैरकपुर की गृह पत्रिका 'सेनानी' ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से प्रकाशित हो रही है तथा मुख्यालय के अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भी पुरस्कृत हो रही है यह अपने आप में गौरव की बात है तथा साथ ही यह भी परिलक्षित होता है कि कार्यालय के कार्मिक स्वेच्छा से हिन्दी कार्यान्वयन के कार्य में सहयोग दे रहे हैं। आशा है कि यह क्रम अविराम जारी रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

रत्नेश कुमार गौतम

(रत्नेश कुमार गौतम)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,
सेक्टर-3,साल्ट लेक
कोलकाता-700097

श्री अमरनाथ तिवारी

संरक्षक की कलम से..

हिंदी के विकास में बंगाल प्रांत की भूमिका उल्लेखनीय है। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने का प्रथम प्रयास यहीं से किया गया था। हिंदी के प्रथम समाचार पत्र "उदन्त मार्तंड" का प्रकाशन कोलकाता से ही हुआ था। इस तरह हिंदी विकास यात्रा में बंग भूमि कि भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उप क्षेत्रीय कार्यालिय, बैरकपुर भी राजभाषा कार्यान्वियन की दिशा में अत्यंत सज्य है एवं इस कार्यालिय से प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका 'सेनानी' के पिछले कई अंकों को निगम मुख्यालय एवं न.रा.का.स. (उपक्रम) कोलकाता द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। पुनः 'सेनानी' के अंक-13 (वर्ष 2022-23) को न.रा.का.स. (उपक्रम) कोलकाता द्वारा तृतीय पुरस्कार के लिए चयनित किया जाना सचमुच हर्ष का विषय है।

राजभाषा का कार्यान्वियन प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति पर कार्य करता है। परंतु तकनीक के जुड़ाव ने राजभाषा के कार्यान्वियन में एक नया आयाम स्थापित किया है। भाषायी डिजिटलीकरण के पश्चात हिंदी भाषा की समृद्धि हुई है तथा इसका प्रचार-प्रसार भी बढ़ा है। हमारा देश आजादी के 75वें वर्षगांठ के सुअवसर पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है। अतः हमारा दायित्व है कि हिंदी भाषा के साथ-साथ सभी भारतीयों भाषाओं के समृद्धि एवं प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें। राजभाषा के रूप में हिंदी एवं मातृभाषा के रूप में सभी भारतीयों भाषाओं की समृद्धि ही हमारा परम लक्ष्य होना चाहिए।

पिछले अंकों की भांति 'सेनानी' का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का सहृदय धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

(अमरनाथ तिवारी)
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,
सेक्टर-3,साल्ट लेक कोलकाता-700097

श्री देबाशीष बरूआ

प्रधान संपादक की कलम से..

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 'सेनानी' का नवीनतम बहुप्रतीक्षित संस्करण आपके हाथों में है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सेनानी को अपनी रचनाओं से समृद्ध करने के लिए कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर परिवार के सदस्यों ने बड़े ही मनोयोग से चुन-चुन कर अपनी रचनाएँ उपलब्ध करवाई है। इस परिवार की सदा से ही यह परिपाटी रही है कि हिंदी कार्यान्वियन हो या हिंदी संबंधित कार्यक्रम, सभी एकजुट होकर करते हैं और यही कारण है कि हमारे कार्यालिय में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वियन बड़े ही अच्छे स्तर का होता है। कार्मिकों और उनके परिवार के लोगों की रचनाओं से समृद्ध इस अंक में भी आपको इस बात का जीवंत प्रमाण मिल ही जाएगा। पत्रिका में नन्हे-मुन्नों की तूलिका से बने चित्र भी इसीलिए समाहित किए गए हैं कि उनमें प्रारंभ से ही राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव बढ़ सके ताकि युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते यह लगन और भी सुदृढ़ हो जाए।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं पर आपके विचार और सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

सादर,

देबाशीष बरुआ
उप निदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,
सेक्टर-3,साल्ट लेक कोलकाता-700097

रमेश साव

संपादक की कलम से..

यह हर्ष का विषय है कि प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बैरकपुर की राजभाषा वार्षिक पत्रिका "सेनानी" के 14 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर में राजभाषा की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा और निगम में हिंदी भाषा के सुनहरे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगा ।

मैंने 01 सितम्बर 2023 को निगम में सहायक निदेशक (राजभाषा) के तौर पर कार्यभार ग्रहण किया एवं मैं इस कार्यालय के कार्मिकों का राजभाषा कार्यान्वियन के प्रति प्रतिबद्धता एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ। यह कार्यालय 'ग' क्षेत्र में है इसके बावजूद राजभाषा हिंदी के प्रति इस कार्यालय के कार्मिकों में जो उत्साह है वह अत्यन्त सराहनीय है। यह कार्यालय राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है तथा कार्यालय का प्रत्येक कर्मचारी इसमें अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। राजभाषा हिंदी पत्रिका कार्यालय के कर्मचारियों के हिंदी प्रेम का प्रतीक होती है। पत्रिका कर्मचारियों की रचनात्मक व सृजनात्मक प्रतिभा को उभारने व अधिकाधिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करती है साथ ही यह वर्षभर कार्यालय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को भी प्रदर्शित करती है।

हिंदी हमारी राजभाषा है जो राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करती है। यह हमारी गौरवशाली व वैभवशाली संस्कृति की वाहक है। आज हर क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता महसूस की जा रही है। निश्चित तौर पर हमारा निगम भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। वर्तमान में हिंदी मात्र प्रशासन की ही भाषा नहीं बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा भी बन गई है एवं निगम में भी दिन-प्रतिदिन इसका प्रचलन बढ़ता जा रहा है। निगम में कार्य करते हुए राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा तथा समर्पण रखना हमारा नैतिक व संवैधानिक दायित्व है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी का सहयोग मुझे राजभाषा कार्यान्वियन एवं प्रचार-प्रसार के लिए मिलेगा एवं निश्चित रूप से हमारा कार्यालय राजभाषा के क्षेत्र में भी नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन, उत्तरोत्तर प्रगति तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रचार प्रसार का एक प्रयास

रमेश साव, सहायक निदेशक (राजभाषा)

तो क्या आप अपना कार्यालयी काम-काज हिंदी में करते है ?
जी नहीं महाशय, मेरी मातृभाषा बंगला है तथा मुझे हिंदी नहीं आती।
आपको पता है कि भारत सरकार द्वारा हिंदी में कार्य करने के लिए अनेकों प्रोत्साहन योजनाएँ चलायी जाती है।
जी नहीं महाशय, मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है।
तो आपकी जानकारी के लिए मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हिंदीतर भाषियों को हिंदी सीखाने के लिए हिंदी शिक्षण योजना द्वारा कक्षाएँ चलायी जाती है जहाँ आप हिंदी सीखकर न केवल देश की राजभाषा के प्रगति में सहायक बनेंगे अपितु आपको इस कार्य हेतु अलग से आर्थिक लाभ भी मिलेगा।
ऐसी बात है तो महाशय मैं भी हिंदी सीखूँगा एवं अपना हर कार्य हिंदी में करने हेतु हर संभव प्रयास करूँगा
जी बिल्कुल। हम सभी भारतवर्ष के निवासी है एवं देश के विकास के लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए और हिंदी में काम करके न केवल आप देश की प्रगति में सहायक बनेंगे अपितु आपको आर्थिक रूप से लाभ भी मिलेगा।
जी हाँ महाशय, हमारे देश की राजभाषा हिंदी है तथा हम सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम अपना सरकारी काम-काज हिंदी में ही करें तथा हिंदी के विकास के लिए हर संभव प्रयास करें।

चंद्रयान मिशन का
अब तक का सफर

चंद्रयान भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा शुरू किए गए भारत के चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम का प्रतिनिधित्व करता है। चंद्रयान कार्यक्रम का उद्देश्य चंद्रमा की सतह, खनिजों, जल-बर्फ की उपस्थिति का अध्ययन करना और भारत की अंतरिक्ष क्षमताओं को बढ़ाना है।

अब तक कुल दो ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर्स के साथ तीन मिशन हो चुके हैं। इनमें से दो ऑर्बिटर सफल रहे । चंद्रयान -2 मिशन का हिस्सा पहला लैंडर और रोवर चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गए। दूसरा लैंडर और रोवर मिशन चंद्रयान-3 23 अगस्त 2023 को चंद्रमा पर सफलतापूर्वक उतरा, जिससे भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतारने वाला पहला देश बन गया, और सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद चंद्रमा पर उतरने वाला चौथा देश बन गया।

चंद्रयान 1

5 अगस्त 2003 को, तत्कालीन प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इस परियोजना की घोषणा की, जिसका अनुमानित लागत ₹350 करोड़ (US$44 मिलियन) थी। उसी वर्ष नवंबर में, सरकार ने चंद्रयान परियोजना को मंजूरी दे दी जिसमें एक ऑर्बिटर शामिल होगा जो सतह के खनिज और रसायन का मानचित्रण करेगा। 22 अक्टूबर 2008 को, चंद्रयान-1 को PSLV रॉकेट से सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। चंद्रयान -1 ने 10 नवंबर को चंद्र कक्षा में प्रवेश किया, जिससे भारत चंद्रमा की परिक्रमा करने वाला छठा देश बन गया। चार दिन बाद 14 नवंबर को मून इम्पैक्ट प्रोब (एम आई पी) चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर शेकलटन क्रेटर में इम्पैक्ट किया, इससे भारत चंद्रमा की सतह पर पहुंचने वाला पांचवां देश बन गया और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचने वाला पहला देश बन गया।

चंद्रयान 2

चंद्रयान-2, चंद्रयान-1 के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा विकसित दूसरा चंद्र अन्वेषण मिशन है। इसमें एक चंद्र ऑर्बिटर शामिल है, और पहले इसमें विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर शामिल थे, जो सभी भारत में विकसित किए गए थे। मुख्य वैज्ञानिक उद्देश्य चंद्र सतह की संरचना में विविधताओं के साथ-साथ चंद्र जल के स्थान और प्रचुरता का मानचित्रण और अध्ययन करना है।

हालाँकि, 6 सितंबर 2019 को उतरने का प्रयास करते समय लैंडर अपने इच्छित प्रक्षेपवक्र से भटक गया और दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसरो को सौंपी गई विफलता विश्लेषण रिपोर्ट के अनुसार, दुर्घटना एक सॉफ्टवेयर गड़बड़ी के कारण हुई थी।

चंद्रयान 3

चंद्रयान 3- चंद्रयान कार्यक्रम का तीसरा मिशन है। 14 जुलाई, 2023 को लॉन्च किए गए इस मिशन में विक्रम नामक एक चंद्र लैंडर और प्रज्ञान नामक एक चंद्र रोवर शामिल है, जो 2019 में चंद्रयान -2 पर लॉन्च किए गए मिशन के समान है।

चंद्रयान-3 को 14 जुलाई 2023 को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया था। अंतरिक्ष यान ने 5 अगस्त को चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश किया, और लैंडर 23 अगस्त को 12:33 यूटीसी पर चंद्रमा के दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र के पास सफलतापूर्वक उतरा और भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के क्षेत्र के पास लैंड करने वाला पहला देश बन गया।

चंद्रयान-3 मिशन का उद्देश्य

इसरो के मुताबिक, 'चंद्रयान-3' 'चंद्रयान-2' का अनुवर्ती (फॉलोऑन) मिशन है । इसका प्राथमिक उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और सॉफ्ट लैंडिंग का प्रदर्शन करना है । इसरो ने इस प्रक्रिया को भविष्य के इंटरप्लेनेटरी मिशनों के लिए एक अहम पहलू बताया है। इसके अलावा इस मिशन के उद्देश्यों में चंद्रमा की सतह पर रोविंग कैपेबिलिटी (घूमने की क्षमता) का प्रदर्शन और इन-सीटू (यथास्थान) वैज्ञानिक प्रयोगों का संचालन करना भी शामिल है।

चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक बड़ा कदम है। यह अंतरिक्ष अन्वेषण में देश की बढ़ती क्षमताओं का प्रमाण है और यह भारत को वैश्विक अंतरिक्ष दौड़ में अग्रणी खिलाड़ी बनने में मदद करेगा। यह मिशन शांतिपूर्ण अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। भारत हमेशा से एक जिम्मेदार अंतरिक्ष यात्रा करने वाला देश रहा है और चंद्रयान 3 उसी परंपरा की निरंतरता है। यह मिशन अंतरिक्ष अन्वेषण में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करेगा और यह दुनिया भर के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा।

मणिशंकर पाणि
प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा

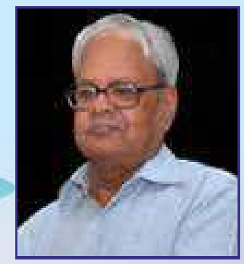

ओम अग्रवाल

तकनीकी के संयोग के बिना भाषाओं का *विकास और संवर्धन संभव नहीं है।*

- श्री ओम अग्रवाल

(ऑनलाइन साक्षात्कार- प्रस्तुति -बिनय कुमार शुक्ल)

मैं : अपने बारे में कुछ बताइए।

श्री अग्रवाल जी : मेरे पिता जी भारतीय सेना में ब्रिगेडियर के पद पर कार्यरत थे। उनके सेवाकाल में मैंने अपनी 11वीं तक की शिक्षा सोलह स्कूलों और इसके उपरांत आगे की शिक्षा 3 विश्वविद्यालयों में पूरी की, जो भारत के विभिन्न प्रान्तों में स्थित हैं। जोधपुर स्थित कॉलेज से एम. एससी. मनोविज्ञान विषय में किया। सन् 1970 में जापानी भाषा में स्नातक की उपाधि स्वर्ण पदक सहित प्राप्त की।

मैं : भारतीय रिजर्व बैंक की अपनी यात्रा के बारे में कुछ बताइए। (इस रोजगार में आने और पूरी सेवा में किस-किस विभाग में कार्यरत रहें।)

श्री अग्रवाल जी : भारतीय रिज़र्व बैंक की सेवा में मैंने सामान्य श्रेणी में प्रवेश किया था। सेवाकाल में कई विभागों में कार्य किया और केन्द्रीय बैंक की कार्यप्रणाली का परिचय भी प्राप्त किया। लेकिन उस समय बैंकों में कम्प्यूटरों का आगमन नहीं हुआ था, सभी कार्य मानव साध्य हुआ करते थे। हां इतना अवश्य है, फेसिट की टोटलिंग मशीन और बिजली से चलने वाले कैलकुलेटरों का उपयोग आरंभ हो चुका था। रिज़र्व बैंक के कार्यों में नए नोटों और सिक्कों का वितरण करना तो था ही, अन्य बैंकों के माध्यम से सरकार की योजनाओं का कार्यान्वयन करना, अनुवर्ती कार्रवाई करना, केन्द्र और राज्य सरकारों के लिए ऋण की व्यवस्था कराना, जैसे अनेक कार्य थे। मेरी अधिकांश सेवा बैंक के आंतरिक प्रशासन और नियमन का कार्य देखने वाले विभागों में रही।

मैं : जैसा कि आप बता रहे थे कि आप भारतीय रिजर्व बैंक के तकनीकी सेवा में नहीं थे पर तकनीकी के प्रति झुकाव ने आपको तकनीकी की ओर अधिक मोड़ा। तकनीकी की ओर आपके झुकाव के लिए आप किसको श्रेय देना चाहेंगे तथा अचानक तकनीकी की ओर झुकाव का कारण क्या रहा होगा उसके बारे में कुछ बताइए।

श्री अग्रवाल जी : मैंने जिस समय अपनी शिक्षा पूरी की, उस समय बेरोजगारी की बड़ी विकराल समस्या थी। उस समय तो युवावर्ग में एक ही बात होती थी कि जो भी

मिले वह पहले हासिल कर लो, फिर बाद में आगे की तैयारी करते रहो। कम्प्यूटर की तरफ मेरा झुकाव कोई अचानक नहीं हुआ बल्कि इस तरफ मैंने तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए निर्णय लिए। कॉलेज में स्नातक स्तर पर अध्ययन के दौरान एक इंजीनियरिंग कॉलेज में सन् 1970 में कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग सिखाने की व्यवस्था हुई तो मैंने उस समय FORTRAN नामक प्रोग्रामिंग लैन्वेज सीखी। बस वहीं से मुझे एहसास हुआ कि देश में आज नहीं तो कल कम्प्यूटर अवश्य आएगा। यही विचार मन में स्थिर हो गया और सन् 1980 में मैंने अपना पहला कम्प्यूटर खरीदा और उस पर आज भी मौजूद प्रत्येक सुविधा उपलब्ध थी। उसी पर घर पर ही अभ्यास करने लगा। बाद में चलकर अनेक माइक्रोसॉफ्ट सर्टिफिकेशन भी हासिल किए। मेरे दो पुत्र हैं और दोनों ही कम्प्यूटर इंजीनियर हैं। उनके पास भी अनेक सर्टिफिकेशन हैं।

जहां तक बैंक में कम्प्यूटर के आने की बात है तो सबसे पहले चेक क्लीयरिंग सेवाओं में कम्पयूटर प्रयुक्त हुआ और उस समय मैंने कोबोल का उपयोग करते हुए कई छोटे-बड़े प्रोग्राम लिखे जिनकी सहायता से मैंने अपने और अपने साथियों के कार्य को सरल बनाया। बैंक में अलग से प्रौद्योगिकी विभाग की स्थापना काफी बाद में हुई। बैंक के जयपुर कार्यालय में सन् 1985 में मैंने प्रौद्योगिकी विभाग की स्थापना के साथ ही वहां का कार्यभार संभाला। इसके अलावा अन्य विभागों में भी कार्य के दौरान मैं कोई न कोई युक्ति तलाश लेता था जिसकी सहायता से घन्टों का काम मिनटों में करने की सहजता रहती थी। अन्य साथियों को भी इसका लाभ मिलता था । मैं उन्हें भी प्रेरित करता रहता था और जब भी जरूरत होती थी तो उन्हें प्रशिक्षण भी देता था।

मैं : आपने अपनी इस तकनीकी यात्रा में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के तकनीकी आयाम के लिए भी काफी काम किया है। कृपया उसके बारे में कुछ बताइए।

श्री अग्रवाल जी : इस बारे में पहली बात तो यह है कि मेरा राजभाषा हिन्दी से केवल उतना ही परिचय है जो सरकारी कामकाज की व्यवस्था में किसी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारी अथवा कर्मचारी का होता है या हो सकता है। हां इतना अवश्य है कि मैंने इस बारे में विचार किया कि कम्प्यूटर के माध्यम से जिन तकनीकी आयामों का सृजन होता है उनमें मशीनी भाषा निरपेक्ष भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। इस मशीनी भाषा को किसी भी मानवीय भाषा में कार्य करने के लिए तैयार किया जा सकता है। बस इसी दिशा में सोचना आरंभ किया तो पाया कि यह हिन्दी में भी कार्य करने में सक्षम है। कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा का प्रयोग मैं उस समय से कर रहा हूं जब यूनिकोड का जन्म भी नहीं हुआ था। अपने अनुभाग के जो भी कार्य हिन्दी में किए जाने अनिवार्य होते थे, जैसे कि वाउचर तैयार करना, कतिपय प्रविष्टियां हिन्दी में दर्ज करना, छुट्टी की मंजूरी की सूचना देना, स्थानांतरण-तैनाती के आदेश आदि कार्य आसानी से हिन्दी और अंग्रेजी द्विभाषी रूप में हो जाते थे। अब कम्प्यूटर को तो इस प्रकार से तैयार किया जाता है कि बारंबार किए जाने वाले कार्यों को आसानी से किया जा सके तो उस क्रम में इन कार्यों को भी करना सहज और सरल रहा। यूनिकोड आने से पहले हिन्दी के लिए मैं सुशा फॉन्ट का प्रयोग करता था। कुल मिलाकर भाषा के संबंध में कम्प्यूटर का प्रयोग कोई विशेष कठिन नहीं रहा।

मैं : यह कहा जाता है कि वर्तमान समय में तकनीकी के सहयोग के बिना भाषा का विकास और संवर्धन संभव नहीं है। इस विषय पर आपकी राय जानना चाहूंगा।

श्री अग्रवाल जी : इसे इस प्रकार से समझा जा सकता है कि जिस प्रकार से छपाई की सुविधा हो जाने से ज्ञान और अनुभवों का संग्रह करना सहज-सुगम हो गया और इसके परिणामस्वरूप ज्ञान का प्रसार भी आसान हो गया। उसी प्रकार से तकनीक ने भी ज्ञान और अनुभवों के संग्रह को पहले की तुलना में कहीं अधिक सहज बना दिया है। भाषा तो ज्ञान और अनुभवों के संग्रह का एक माध्यम है। भाषा पूरी तरह से सामाजिक होती है, भाषा का विकास समाज के विकास पर आधारित है। सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन भाषा पर प्रभाव डालते हैं और भाषा का विकास होने लगता है, नई तकनीक आने से शब्दों के नए प्रयोग सामने आते हैं नई शब्दावलियां तैयार होती हैं। इसे केवल तकनीक का नाम नहीं देना चाहिए बल्कि यह प्रौद्योगिकी है, तकनीक इसे परिसीमित कर देती है। भाषा का विकास तो नए साधनों के आने से पहले भी होता रहा है और होता रहेगा। हां इस नई प्रौद्योगिकी के आने से एक समाज या एक देश या एक क्षेत्र के लोग दूसरे समाजों, देशों और क्षेत्रों के लोगों की भाषा को भी कुछ हद तक समझने में सक्षम हो जाते हैं। हालांकि इस दिशा में अभी बहुत कार्य होना बाकी है, पर जिस तेजी से भाषा को समझने में नई प्रौद्योगिकी सहायता कर रही है, उससे एक ही भाषा को सम्पर्क भाषा के रूप में अपनाने की मजबूरी नहीं रह जाएगी।

मैं : तकनीकी और प्रौद्योगिकी को यदि उसकी जटिल परिभाषाओं से बाहर निकाल कर आम आदमी के अनुकूल उसे सरल और उपयोगी बनाने पर आपने हमेशा ही बल दिया है और इसके लिए आपने अनेकों ऐसे

उपकरण बनाकर उनका लाभ दैनिक जीवन में उठा रहे हैं। इसके बारे में भी कुछ बताइए।(आप जिन विशेष उपकरण जैसे रिमोट से गांव के घर में बिजली जलाने आदि का प्रयोग करते हैं कृपया उसके बारे में कुछ बताइए)।

श्री अग्रवाल जी : देखिए तकनीक और प्रौद्योगिकी का आंतरिक स्वरूप सदा ही जटिल रहा है और रहेगा। इसे आसान नहीं बनाया जा सकता है, लेकिन इसका बाह्य स्वरूप इस प्रकार का अवश्य बनाया जा सकता है कि साधारण शिक्षा प्राप्त भी उसका प्रयोग कर सकें। उदाहरण के लिए वाट्सअप को ही लीजिए। आइकॉन अर्थात चित्र आधारित होने के कारण इसके प्रयोग को समझना आसान है तो इसमें संदेश टाइप करना किंचित कठिन है, उसके लिए भाषा के साथ-साथ लिपि का ज्ञान भी आवश्यक है, लेकिन इसी में वाइसमैसेज के माध्यम से किसी भी भाषा में संदेश को रिकार्ड करके भेजा जा सकता है। ऐसे में लिपि का ज्ञान होना या नहीं होना बहुत महत्त्व नहीं रखता है। जहां तक दूरस्थ बैठे हुए गांव में अपने घर की लाइट जलाने की बात है तो उसके लिए तकनीक ही नहीं अपितु कतिपय यंत्रों और उपकरणों की जानकारी होना भी जरूरी है। यह ठीक वैसे ही है जैसे सभी प्रकार के वाहनों को चलाने के लिए कुछ न कुछ मार्गदर्शन और प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती ही है। प्रौद्योगिकी और तकनीक से दूरस्थ कार्य कराने के लिए कतिपय कोर्डिनेट्स देने जरूरी होते हैं। दूरस्थ नियंत्रण के लिए सबसे पहले तो एलेक्सा या ऐसी ही कोई अन्य युक्ति के अलावा वाइफाई युक्त स्मार्ट बल्ब, वाइफाई युक्त स्मार्ट टीवी, स्मार्ट कैमरा (जो पुराने मोबाइल से भी बन जाता है) और साथ ही सभी उपकरणों को सदैव निर्बाध पॉवर सप्लाई की जरूरत होती है। इसके बाद कुछ एप्प की सहायता से वांछित कार्य को पूरा किया जाता है। इसमें सभी उपकरण एलेक्सा, इन उपकरणों की मोबाइल एप्प तथा आई.एफ.टी.टी.टी के माध्यम से कार्य को करते हैं।

मैं : आप और आपकी टीम ने अंकों को देवनागरी लिपि में और बड़े अंकों को आसानी से लिखने के लिए एक विशेष सॉफ्टवेयर का निर्माण किया है,कृपया उसके बारे में कुछ बताइए।

श्री अग्रवाल जी : कार्यालयों में ही नहीं, कई बार सामान्य प्रयोग में भी अंकों के अलावा उसी संख्या को शब्दों में भी लिखना होता है। इसके लिए कोई विशेष सॉफ्टवेयर नहीं होता है बल्कि शब्दों में लिखने का यह कार्य मैक्रो की सहायता से किया जाता है। अंग्रेजी में यह सुविधा काफी पहले से विद्यमान है। लेकिन हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओं में इसके लिए मैक्रो तैयार करने पड़े। मैंने और मेरे साथियों ने मिलकर हिन्दी तथा गुजराती के लिए इस प्रकार के मेक्रो तैयार किए और इनका सफलतापूर्वक उपयोग भी हो रहा है। इन मेक्रोज को तैयार करने की प्रक्रिया बहुत जटिल तो नहीं लेकिन कठिन अवश्य है। इन मेक्रोज को चलाने की विधि को आसानी से सीखा जा सकता है, हालांकि यहां इस बारे में विस्तार से बता पाना संभव नहीं होगा।

मैं : अभी हाल ही में आपके एक वीडियो में मैंने कुछ विशेष वेबसाइटों का विवरण देखा जिसमें आपने बताया है कि इन वेबसाइटों पर आप बोलकर भी एक साथ कई भाषाओं में सीधे अनुवाद कर सकते हैं। कृपया उनके बारे में कुछ बताइए।

श्री अग्रवाल जी : ऐसी कुछ वेबसाइट हैं जो अनुवाद सेवाएं प्रदान करती हैं। इनमें से कुछ ऐसी हैं जो सामान्य प्रकार के अनुवाद ही कर पाती हैं तो कुछ ऐसी भी हैं जो भुगतान लेकर अपनी सम्पूर्ण सेवाएं प्रदान करती हैं। इन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए आपके कम्प्यूटर, लैपटॉप, आदि में माइक और स्पीकर का होना नितांत आवश्यक है। इसके बाद तो प्रयोक्ता इच्छित भाषा में बोलकर वांछित भाषा में अनुवाद प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार से किए गए अनुवादों को न केवल पाठ के रूप में प्राप्त किया जा सकता है बल्कि इस प्रकार के अनुवादों को सुना भी जा सकता है। इस प्रकार के अनुवाद में दैनिक तथा नेमी प्रकार के अनुवाद ही संभव हो पाते हैं। मशीन की सहायता से साहित्य का अनुवाद जैसे कि काव्यानुवाद और वैज्ञानिक, विधिक, चिकित्सा, आदि के अनुवाद संभव हो तो जाते हैं, पर यह अनुवाद फिलहाल स्तरीय नहीं होते हैं । इसके लिए अभी मानवीय सम्पादन आवश्यक है।

मैं : आपके अधिकांश तकनीकी प्रयोग भाषा पर रहे हैं और इसके साथ ही आपने माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस में काम को आसान बनाने के लिए भी अपने कई प्रयोगों को सार्वजनिक किया है। कृपया उनके बारे में कुछ बताइए।

श्री अग्रवाल जी : ऐसा नहीं है कि मेरे प्रयोग भाषा को ही लेकर रहे हैं। जैसा कि पहले मैंने पहले भी कहा है कि कम्प्यूटर की अपनी कोई भाषा नहीं होती है। भाषा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का प्रयोग एक सामान्य सी बात है। हां, इतना अवश्य है कि यदि कम्प्यूटर के परिचालन का ज्ञान है, इस पर प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रोग्रामों के संचालन का ज्ञान है तो आधुनिक युग के किसी भी कम्प्यूटर पर दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में आसानी से कार्य किया जा सकता है। हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषाओं में प्राप्त और प्रेषित ईमेल की गणना का कार्य भी आसानी से किया जा सकता है।

मैं : अक्सर यह देखा गया है कि हिंदी भाषा का पठन पाठन करने वाले तकनीकी शिक्षा की ओर बहुत कम बढ़ पाते हैं ऐसे में भाषा में तकनीकी के प्रयोग से संबंधित पक्ष को समझना या स्वीकारना कठिन होता है। इसमें राजभाषा के कार्यान्वयन का पक्ष भी कहीं न कहीं उपेक्षित होने लगता है। इसपर आपकी क्या राय है?

श्री अग्रवाल जी : यहां मैं आपसे भी एक बात मैं करना चाहूंगा, क्या केवल अंग्रेजी पढ़ा हुआ व्यक्ति समस्त तकनीक को समझ लेगा, क्या केवल अंग्रेजी पढ़ा व्यक्ति प्रोग्रामिंग कर लेगा – शायद नहीं। और क्या हिन्दी भाषा का पठन-पाठन करने वाला व्यक्ति स्मार्ट फोन का प्रयोग नहीं करता है। हिन्दी को लेकर ऐसा विचार ठीक नहीं है। क्योंकि ऐसे लोग बहुत ही कम होंगे जो केवल हिन्दी भाषा ही पढ़ते और पढ़ाते हैं, हिन्दी भाषा के साथ-साथ वे अन्य विषय भी अवश्य ही पढ़े होते हैं। तकनीक का प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षण चाहिए होता है, और मेरे विचार से तो तकनीक सीखने में भाषा की कोई बाधा नहीं हो सकती है। विन्डोज के सभी मीनू, ऑइकान के नामों, आदि जैसी युक्तियों को प्रयोक्ता आसानी से अपनी इच्छित भाषा और लिपि में परिवर्तित कर सकता है। यदि सीखने की धुन है, ललक है तो भाषा की बाधा कहीं भी नहीं है। मैं बहुत से व्यक्तियों को जानता हूं जो हिन्दी भाषा का पठन पाठन भी करते हैं और कम्प्यूटर पर भी सहजता और तीव्रता से काम करते हैं। अब राजभाषा के कार्यान्वयन में तकनीक का उपयोग किस प्रकार से किया जाए यह तो प्रयोक्ता को सोचना होगा। मैंने अपने एक साथी के साथ मिलकर हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही रिपोर्ट के संकलन हेतु एक्सेल शीट तैयार कराई है, जिसमें आंकड़ों का व्यवस्थित रूप से संकलन किया जा सकता है। अब इसे आप प्रत्येक तिमाही और वर्ष के अनुसार रखते हैं तो ये आंकड़े, कई रिपोर्टें तैयार करने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार से रोस्टर बनाया जा सकता है। संकलित रिपोर्ट के आधार पर अनुवर्ती कार्रवाई के पत्रों को तैयार टेम्पलेट के अनुसार भेजा जा सकता है। इन पत्रों को सीधे ही ईमेल से भी भेजा जा सकता है। और भी कई उपयोग हो सकते हैं। मेरे विचार से यह राजभाषा के कार्यान्वयन में सहायक ही सिद्ध होगा। आप कह रहे हैं कि कार्यान्वयन का पक्ष प्रभावित होगा मेरा मानना है कि इसमें और तेजी लाई जा सकेगी। शर्त यही है कि इन युक्तियों का सही प्रकार से उपयोग किया जाए।

मैं : वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लोगों का झुकाव राजभाषा हिंदी और उसके तकनीकी पक्ष की ओर अधिक हो इसके लिए व्यक्तिगत स्तर पर क्या किया जा सकता है।

श्री अग्रवाल जी : ऐसी कोई भी युक्ति या उपकरण जो हमारे काम में सहायक हो उसके बारे में जानकारी हासिल करना सदा सर्वदा ही उपयोगी रहता है। कोई भी नई तकनीकी हो तो उसके लिए प्रशिक्षण भी लेना पड़ सकता है। लेकिन इतना अवश्य है कि जो भी नई तकनीकी आती है वह कार्यचालन में सहजता लाती है। यह तकनीक ही है जिसने बैंकिंग सेवाओं को इतना सर्वसुलभ बना दिया है। अन्य कार्यों में भी सुविधा हुई है। यह तो प्रयोक्ता के विवेक पर है कि वह नई तकनीकी को अपना मित्र बनाए या शत्रुवत व्यवहार कायम करे।

■ ■ ■

कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक सुरक्षा कवच

सामाजिक सुरक्षा एक समृद्ध और सुरक्षित जीवन की ओर कदम बढ़ाने का माध्यम है। यह एक ऐसी योजना है जो व्यक्तिगत और समजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान प्रदान करती है और समाज के अधिकांश लोगों को विभिन्न रूपों में लाभ पहुंचाती है। भारत में, सामाजिक सुरक्षा के रूप में कई सरकारी योजनाएँ हैं, जिनमें से एक है "कर्मचारी राज्य बीमा निगम"।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम भारत सरकार द्वारा चलायी जाने वाली एक सामाजिक सुरक्षा योजना है जो कर्मचारियों और उनके परिवारों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य बीमाकृत व्यक्तियों एवं उनके आश्रितों को विभिन्न प्रकार की चिकित्सा सेवाओं की सुविधा प्रदान करना है, जिसमें मुफ्त चिकित्सा, दवाएँ, और अस्पताल द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ शामिल हैं।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की शुरुआत 1952 में हुई थी और यह भारत के विभिन्न राज्यों में कार्यरत बीमाकृत व्यक्तियों के लिए उपलब्ध है। इसका गठन कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 के तहत हुआ था और इसका मुख्य कार्य बीमाकृत व्यक्तियों और उनके आश्रित परिवारों को चिकित्सा और वित्तीय सहायता प्रदान करना है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम के अंतर्गत बीमाकृत व्यक्तियों और उनके आश्रित परिवारों को निम्नलिखित हितलाभ प्राप्त होते हैं:

(क) चिकित्सा हितलाभ : बीमाकृत व्यक्ति और उनके आश्रित परिजनों को बीमा योग्य रोजगार में आने के दिन से पूर्ण चिकित्सा सेवा प्रदान की जाती है। बीमाकृत व्यक्ति और उनके आश्रित परिजनों के उपचार पर व्यय की कोई अधिकतम सीमा नहीं है। सेवा निवृत्त और स्थायी अपंग बीमाकृत व्यक्तियों और उसके पति/पत्नी को रुपये 120/- के सांकेतिक वार्षिक प्रीमियम पर चिकित्सा सेवा प्रदान की जाती है ।

(ख) बीमारी हितलाभ : बीमारी हितलाभ बीमाकृत कामगार को प्रमाणित बीमारी अवधि के दौरान एक वर्ष में अधिकतम 91 दिनों के लिए उसकी मजदूरी के 70 प्रतिशत की दर से नकद प्रतिपूर्ति के रूप में देय होता है । बीमारी हितलाभ की पात्रता के लिए बीमाकृत कामगार से अपेक्षा की जाती है कि 6 महीनों की अंशदान अवधि में 78 दिनों के लिए अंशदान दें।

(i) विस्तारित बीमारी हितलाभ : 34 घातक और दीर्घकालीन बीमारियों के मामले में मजदूरी के 80% की बढ़ी दर से उसे 2 वर्षों तक विस्तारित किया जा सकता है ।

(ii) वर्धित बीमारी हितलाभ : इसके अलावा बीमाकृत व्यक्तियों द्वारा बंध्यकरण कराने पर वर्धित बीमारी हितलाभ पुरुष और महिला कामगारों को क्रमशः 7 दिन/14 दिन के लिए पूर्ण मजदूरी के बराबर देय होगा

(ग) मातृत्व हितलाभ : मातृत्व हितलाभ पूर्ववर्ती वर्ष में 70 दिनों के अंशदान देने की शर्त के अधीन प्रसूति/गर्भावस्था के लिए मातृत्व हितलाभ पूर्ण मजदूरी दर पर छब्बीस सप्ताह के लिए अदा किया जाता है जिसे चिकित्सा परामर्श पर एक महीने के लिए बढ़ाया जाता है ।

(घ) अपंगता हितलाभ

1. अस्थायी अपंगता हितलाभ : जब तक अपंगता रहती है अस्थायी अपंगता हितलाभ मजदूरी के 90% की दर से अदा किया जाता है।

2. स्थायी अपंगता हितलाभ : चिकित्सा बोर्ड द्वारा प्रमाणित अर्जन क्षमता की हानि की सीमा पर निर्भर यह हितलाभ मासिक भुगतान के रूप में मजदूरी के 90% की दर से अदा किया जाता है।

(ङ) आश्रितजन हितलाभ : जिन मामलों में मृत्यु रोजगार चोट या व्यावसायिक दुर्घटना के कारण होती है वहाँ मृतक बीमाकृत व्यक्ति के आश्रितों को मासिक भुगतान के रूप में मजदूरी के 90% की दर से अदा किया जाता है।

(च) अन्य हितलाभ:

अंत्येष्टि व्यय : बीमाकृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार

करने के लिए संबंधियों को रुपये 10,000/- तक भुगतान किया जाता है।

प्रसूति व्यय : जहाँ क.रा.बी. योजना अंतर्गत चिकित्सा सुविधा उपलब्ध न होने की स्थिति में बीमाकृत महिला या बीमाकृत व्यक्ति को उसकी पत्नी की प्रसूति के लिए प्रसूति व्यय दिए जाने का प्रावधान है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त कुछ अन्य आवश्यकता आधारित हितलाभ भी बीमाकृत कामगारों को उपलब्ध करवाये जाते हैं

कर्मचारी राज्य बीमा निगम का मुख्य लक्ष्य बीमाकृत व्यक्तियों और उनके परिवारों को सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सहायता प्रदान करके उनके जीवन को सुरक्षित और स्वास्थ्यपूर्ण बनाना है। इस योजना के तहत कर्मचारियों को उनकी आर्थिक चिंताओं से निपटने में मदद मिलती है और वे चिकित्सा सेवाओं का स्वागत करते हैं जो उनके स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुरक्षा योजना है जो बीमाकृत व्यक्तियों और उनके परिवारों को अच्छे स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा का लाभ प्रदान करती है। इसका उद्देश्य भारतीय समाज को और समृद्ध और सुरक्षित बनाना है और कर्मचारियों को उनके आर्थिक चिंताओं से निकालने में मदद करना है। कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि हर कोई अच्छे स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा का अधिकार प्राप्त कर सकता है।

पोलीकार्प सोरेंग
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कविता

हाँ, हूँ मैं स्त्री।

मैं ही हूँ इस सृष्टि की जननी ।
ममता स्नेह दया की मूरत ।
बहन बेटी और मां की सूरत ।
अबला नहीं मैं सुन ले संसार ।
बला को टाल दूं बनकर ढाल ।
कोमल हूँ कमजोर नहीं ।
टूट के बिखर जाऊं वह डोर नहीं।
सांझ हूँ मैं, मैं ही भोर ।
बंधी है मुझसे जीवन की डोर ।
घरेलू हूँ या कामकाजी ।
दोनों रूप में मारी बाजी ।
एक दिन के सम्मान के लिए भूखी नहीं हूँ मैं ।
जीवन के अदृश्य संघर्ष के आगे झुकी नहीं हूँ मैं ।
बांध ना मुझको बेड़ियों में संसार ।
गर्भ में ही ना मुझको मार ।
नारी दिवस तो रहने ही दे ।
दे दे जीवन जीने का अधिकार।।

कंचन प्रसाद साव
सहायक, शाखा कार्यालय,
भाटपाड़ा

कार्यालय की गतिविधियाँ

श्री प्रणय सिन्हा, बीमा आयुक्त, कार्मिक एवं प्रशासन तथा प्रभारी, पूर्वी अंचल द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन तथा संबोधन

क.रा.बी. निगम (पश्चिम बंगाल) के 117 वें क्षेत्रीय बोर्ड मीटिंग का आयोजन

कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 की कुछ स्मृतियाँ

सेनानी के 13 वें अंक का विमोचन करते हुए तत्कालीन अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक महोदय

स्वाधीनता दिवस, 2023 के उपलक्ष्य पर उ.क्षे. का. बैरकपुर क.रा.बी., निगम के कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कार्यालयाध्यक्ष महोदय

आजादी का अमृत महोत्सव -2023, निधि आपके निकट कार्यक्रम का आयोजन

क.रा.बी. निगम दिवस कार्यक्रम का आयोजन

क.रा.बी. निगम पखवाड़ा के दौरान शाखा कार्यालयों में सुविधा समागम कार्यक्रम का आयोजन

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

नराकास गतिविधियों में प्रतिभागिता करते हुए कार्यालय के अधिकारीगण

चित्र वीथिका

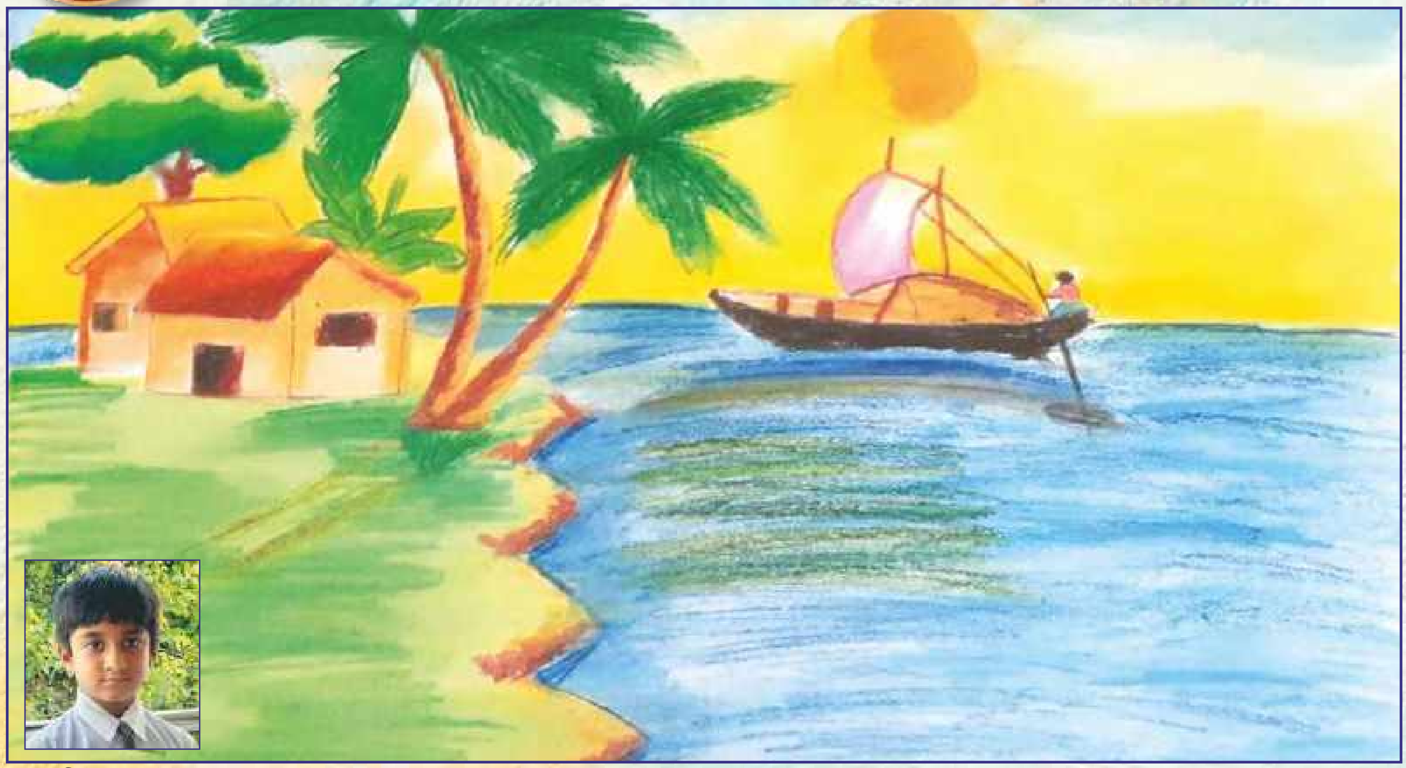

अयंतिक सरकार
पुत्र - श्री बिनय सरकार, कक्षा- IV

सौमद्री बारूई
पुत्र - श्री मिल्टन बारूई, कक्षा- II

चित्र वीथिका

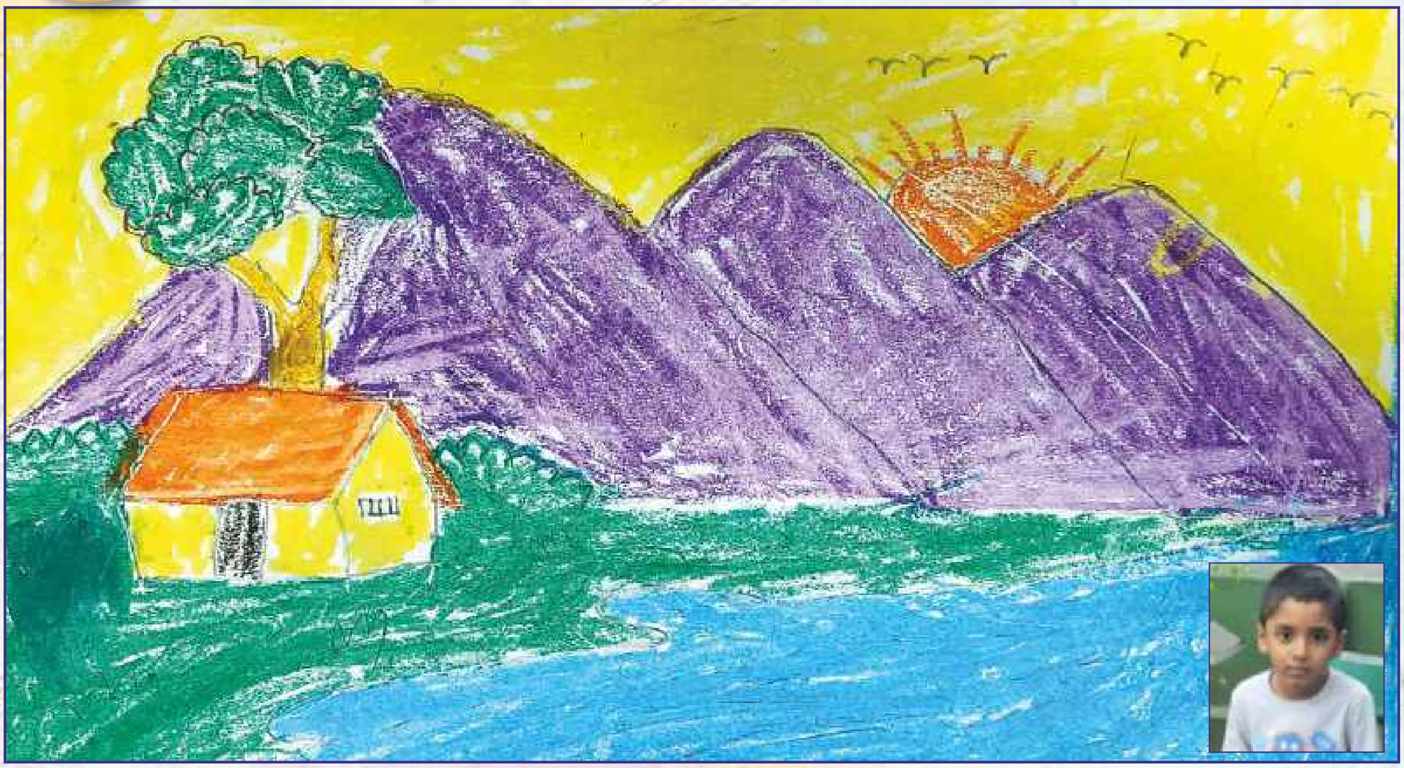

दियान मण्डल
पुत्र - श्री ध्रुव मण्डल, कक्षा – अपर नर्सरी

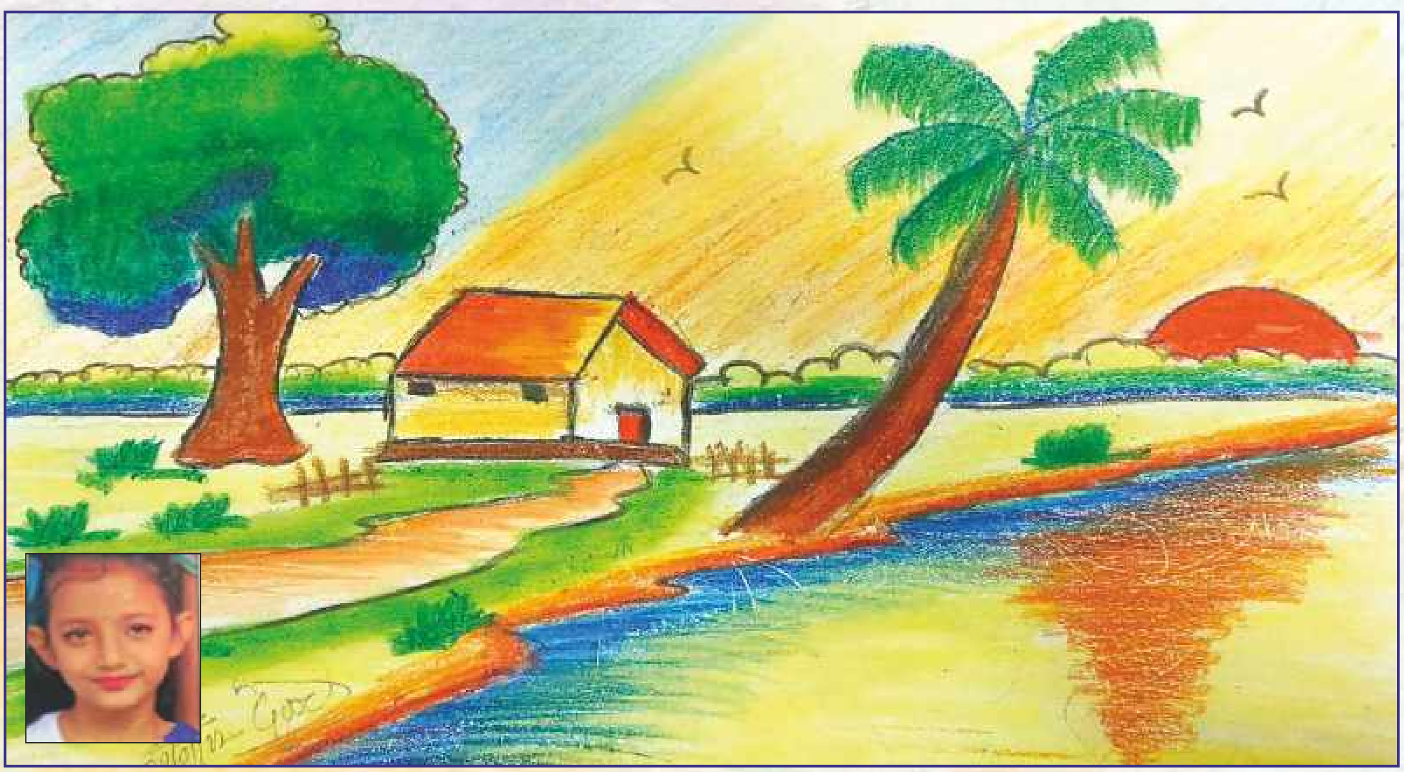

अतीबा असलम
पुत्री मो. असलम

स्वास्थ्य ही धन है

स्वास्थ्य ही धन है, जितना राष्ट्र के लिए सच है उतना ही व्यक्ति के लिए भी। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अच्छा स्वास्थ्य सभी आशीर्वादों में सबसे बड़ा है। हर साल लाखों मानव जीवन रोकथाम योग्य बीमारियों की भेंट चढ़ जाते हैं।

अज्ञानता बीमारी की उत्पत्ति और प्रकृति है, जनसंख्या के बड़े पैमाने पर स्वच्छता संबंधी ज्ञान की कमी, पुरानी गरीबी और ठंड के प्रति उदासीनता हमारे देश में उच्च मृत्यु दर के लिए जिम्मेदार हैं।

आधुनिक राष्ट्र ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के मूल्य और इसके संरक्षण के लिए काम को राष्ट्रीय संसाधनों के संरक्षण की एक प्राकृतिक शाखा के रूप में मान्यता दी है और सभी स्वच्छता उपायों का उद्देश्य जनसंख्या के श्रम की अवधि को बढ़ाने की दृष्टि से जीवन की स्थितियों में सुधार करना है।

लोगों को स्वच्छता विज्ञान और रोगों की सामान्य विकृति विज्ञान में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए, जिसका लक्ष्य निश्चित रूप से विकास को अधिक परिपूर्ण, क्षय को कम तेजी से, जीवन को अधिक सशक्त और मृत्यु को अधिक दूरी प्रदान करना होगा।

स्वच्छता को स्कूलों और कॉलेजों में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। हैजा, टाइफाइड, पेचिश आदि महामारियों की उत्पत्ति अशुद्ध जल से होती है।

गर्म पानी में ठंडा पानी मिलाने की आदत को खत्म किया जाना चाहिए और पूरी तरह से ठंडा हो चुका गर्म पानी पीने की आदत स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

अस्वास्थ्यकर भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। यह जठरांत्र पथ में जलन और सूजन का कारण बनता है और परिणामस्वरूप अपच, दस्त, पेचिश होता है।

अच्छा स्वास्थ्य वह स्थिति है जिसमें मनुष्य का पाचन अच्छा हो और अच्छी भूख हो, सामान्य श्वास और नाड़ी हो, रक्त की मात्रा और गुणवत्ता अच्छी हो, मजबूत नसें और शांत दिमाग हो, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग हो, मुक्त गति हो आंतों की स्थिति, ललचाने की सामान्य स्थिति, चमकता चेहरा और चमकती आंखें।

अगला प्रश्न यह है कि हमारा स्वास्थ्य अच्छा क्यों होना चाहिए? हमारा स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए ताकि हम चार प्रकार के पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कर सकें। यदि हम पुण्य कर्म करेंगे तो हमें धन मिलेगा और हम अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति कर सकेंगे। तब हम स्वयं को साकार करने का प्रयास कर सकते हैं। अच्छाई के बिना हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकते।

अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य को स्वास्थ्य के नियमों और स्वच्छता के नियमों का कठोरता से पालन करके, पौष्टिक, हल्का पर्याप्त, आसानी से पचने योग्य, पौष्टिक, हल्का भोजन या सात्विक आहार लेकर और शुद्ध हवा में सांस लेकर, नियमित योगासन करके प्राप्त किया जा सकता है। रोजाना ठंडा स्नान, खान-पान, शयन और संभोग में संयम बरतने से। अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को जप, ध्यान, ब्रह्मचर्य, यम और नियम का अभ्यास और सही आचरण, सही बात, सही बोलना और सही कार्य, आत्म विचार, विचार परिवर्तन, मन को सुखद विचारों पर केंद्रित करके आराम देकर प्राप्त और बनाए रखा जा सकता है।

हम सभी विश्व की भलाई और अपने उत्थान के लिए पूर्ण सद्भाव और स्वास्थ्य सहयोग के साथ निःस्वार्थ भाव से काम करें । हमारे अंग-प्रत्यंग मजबूत और स्वस्थ हों। हम अपने सांसारिक जीवन की सामान्य अवधि सौ वर्ष तक जीवित रहें - निःस्वार्थ सेवा करते हुए, गीता का अध्ययन करते हुए और सात्विक गुणों का विकास करते हुए दुनिया के विभिन्न कोनों में खुशी, आनंद और ज्ञान का संचार करें।

सुब्रत अधिकारी
अधीक्षक, राजस्व -I शाखा

राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रचार-प्रसार

14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला। भारतीय संविधान के भाग XVII में अनुच्छेद 343 से 351 तक संघ की राजभाषा के संबंध में उल्लेख किया गया है। राजभाषा कहने से हमारा तात्पर्य वह भाषा है जिसे संविधान द्वारा राजभाषा अर्थात सरकारी काम-काज की भाषा का दर्जा दिया गया है। भारत सरकार के अधीन कार्यरत कार्यालयों के प्रत्येक कर्मचारी का यह संवैधानिक दायित्व है कि वह राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को सुनिश्चित करें एवं अपने कार्यालय को राजभाषा कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अपना सहयोग प्रदान करें। कार्यालयों में कार्य करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है:-

01. धारा 3 (III) के तहत आने वाले समस्त दस्तावेजों का द्विभाषी रूप में जारी किया जाना सुनिश्चित करें।

02. राजभाषा नियम 5 के तहत प्राप्त होने वाले हिंदी पत्रों का जवाब हिंदी में दिया जाना सुनिश्चित करें।

03. हिंदी पत्राचार एवं नोटिंग को बढ़ाने की दिशा में प्रयास किया जाए और अपने क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा प्राप्त प्रतिशत को बढ़ाने हेतु प्रयास किया जाए।

04. प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए और इस कार्यशाला में कंप्यूटर पर नोटिंग, ड्राफ्टिंग तथा पत्र लेखन का अभ्यास कराया जाए।

05. जिन कर्मचारियों को हिंदी में अब तक कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है उन्हें प्रशिक्षण के लिए नामित करें एवं प्रशिक्षित कर्मचारियों को हिंदी में काम करने का निदेश जारी करें।

06. कार्यालय के 80 प्रतिशत कर्मचारियों के हिंदी भाषा में प्रशिक्षित होने की स्थिति में नियम 10(4) एवं नियम 8(4) के लिए कार्रवाई की जानी चाहिए।

07. प्रत्येक तिमाही मे विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक का आयोजन किया जाना चाहिए एवं बैठक में लिए गए निर्णयों पर कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।

08. तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर मुख्यालय एवं राजभाषा विभाग एवं अन्य संबंधित स्थानों पर भेजा जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

09. कार्यालय के कर्मचारियों को राजभाषा नीति-नियमों तथा पुरस्कार योजनाओं के संबंध में जानकारी दी जानी चाहिए तथा हिंदी में काम करने वाले कार्मिकों को नियमानुसार हिंदी में काम करने हेतु पुरस्कार योजनाओं का लाभ दिया जाना चाहिए।

10. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में प्रतिभागिता सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

11. कार्यालय का वेबसाइट द्विभाषी होना चाहिए।

12. आम जनता की सूचना के लिए लगाए गए सूचना बोर्ड द्विभाषी रूप में लगाए जाने चाहिए।

13. कार्यालय में आज का शब्द एवं विचार लिखा जाना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

14. राजभाषा कार्यान्वयन किसी एक व्यक्ति या राजभाषा शाखा की ही जिम्मेदारी नहीं है यह एक टीम वर्क है एवं इसमें कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी को अपने स्तर पर योगदान देना चाहिए।

उपर्युक्त तथ्यों तथा राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए हम निश्चित तौर पर राजभाषा हिंदी के कार्यान्यन तथा प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे सकते हैं।

हिंदी भाषा ही वह माध्यम जो पूरे देश को एकता के एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है ठीक उसी तरह हमारी राजभाषा हिंदी भी कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी को राजभाषा द्वारा आपस में जुड़ने तथा देशवासियों को देश की भाषा में सेवा प्रदान करने का अवसर प्रदान करती है।

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि – कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को विदेशी भाषाओं द्वारा न तो ठीक-ठीक अभिव्यक्त कर सकता है और न ही उसके माध्यम से ठीक-ठीक उन्नति कर सकता है।

अतः आइए हम सब मिलकर राजभाषा के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करें

तथा कार्यालय को राजभाषा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपना सहयोग प्रदान करें।

रमेश साव
सहायक निदेशक(राजभाषा)

रैगिंग: एक सामाजिक अपराध

"रैगिंग" शब्द अंग्रेजी शब्द "rag"(राग) से लिया गया है जिसका अर्थ है "क्रिया"। लेकिन इस "क्रिया" के अब अलग-अलग अर्थ हैं। विभिन्न शारीरिक या मानसिक गतिविधियों को संदर्भित करना जैसे कि असभ्य व्यवहार, बुरे चुटकुले, आक्रामक व्यवहार, चिढ़ाना, परेशान करना, मजाक करना आदि को "रैगिंग" के नाम में जाना जाता हैं। एक व्यक्ति या छात्रों का समूह जानबूझकर मौखिक रूप से किसी अन्य व्यक्ति या छात्रों के समूह को गाली देता है, किसी अन्य छात्र का शारीरिक और मानसिक शोषण करता है और उत्तेजित करता है - आमतौर पर इस प्रकार की बदमाशी को "रैगिंग" कहा जाता है। एक शब्द में, "रैगिंग" दमनकारी गतिविधि का एक रूप है। न केवल छात्र समुदाय में, बल्कि इस बड़ी रैगिंग का जहर समाज के सभी क्षेत्रों में फैल गया है।

"रैगिंग" एक बहुत ही जघन्य सामाजिक अपराध है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इसे कितना अवचेतन मानते हैं? इंसान सभ्यता की प्रगति में ज्यादा आधुनिकता के सांचे को तोड़ने की कितनी भी कोशिश कर ले, लेकिन खून में 'अत्याचारी' नाम का एक जानवर लंबे समय से रहा है। और जब उस वर्चस्व को प्राप्त करने की इच्छा अचानक जाग उठती है तो बेवजह उत्पीड़न की इच्छा भी जाग उठती है। यह विशेष रूप से कॉलेज और विश्वविद्यालय के छात्रावासों में देखा जाता है। नए छात्रों को पुराने और दूसरे या तीसरे वर्ष के छात्रों द्वारा इस तरह की शारीरिक और मानसिक यातना किया जाता है - जैसे कि उन्हें विचित्र, अश्लील सवालों के जवाब देने के लिए मजबूर करना, उन्हें ठंड में स्नान करने के लिए मजबूर करना, बीड़ी/सिगरेट पीने के लिए मजबूर करना, एक पैर पर पूरी रात खड़े रहना आदि। इस तरह नवागंतुकों का जीवन बिल्कुल बोरिंग हो जाता है। यदि नवागत छात्रों बड़े भाई के इस आपत्तिजनक निर्देश का पालन नहीं करते हैं या इस आपत्तिजनक आदेश का पालन नहीं करना चाहते हैं, तो उन्हे विभिन्न प्रकार की शारीरिक और मानसिक यातनाएं दी जाती हैं। इस रैगिंग के परिणामस्वरूप कई छात्रों ने कॉलेज/विश्वविद्यालय छोड़ दिया और अपनी शिक्षा बंद कर दी, कई शारीरिक या मानसिक रूप से अपंग हो गए हैं, जबकि कईयों की मौत हो गई है। हाल ही में कुछ विश्वविद्यालयों और इंजीनियरिंग कॉलेजों में कुछ वीभत्स और अमानवीय "रैगिंग" की सूचना मिली है, जिसमें देखा गया है कि कई छात्रों के उज्वल भविष्य के सपने अमानवीय यातना सहन न कर पाने के कारण रुक गए हैं।

"रैगिंग" करने वालों के पक्ष में तर्क काफी हास्यास्पद लगते हैं, क्योंकि उनका कहना है कि "रैगिंग" नए छात्रों को उस कॉलेज/विश्वविद्यालय के लिए फिट बनाना सिखाती है और इस तरह पुराने छात्रों के साथ संबंधों को गहरा करती है। लेकिन इस तरह का तर्क "रैगिंग" करने का सिर्फ एक झूठा बहाना है। वास्तव में, मनुष्य में प्रभु की प्यास "रैगिंग" के माध्यम से प्रकट होती है। मूल रूप से, रैग्गर खुद को नायक के रूप में सोचते हैं। एक और तर्क यह है कि चूंकि उन्हें पहले वर्ष में "रैगिंग" की गई थी, इसलिए वे दूसरे या तीसरे वर्ष में पहुंचने पर प्रथम वर्ष के छात्रों को भी "रैगिंग" करेंगे।

"रैगिंग" इन दिनों एक प्रसिद्ध आतंक शब्द है। "रैगिंग" की भयावहता केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं है, यह जानलेवा बीमारी समाज के सभी स्तरों पर संक्रामक रोग की तरह फैल रही है। रैगिंग नामक यह बीमारी पुलिस-प्रशासन, कार्यालय-कचहरी, राजनीति-सामाजिक नीति सभी क्षेत्रों में संक्रमित हो चुकी है। उदाहरण के लिए, जब कोई जमीन या घर खरीदने जाता है, तो क्लब के विकास के नाम पर पैसा लगभग जबरन लिया जाता है। विभिन्न बहानों पर दान के नाम पर एक प्रकार की वित्तीय यातना या रैगिंग की जाती है। पुलिस-प्रशासन में उच्च पदस्थ अधिकारी निचले रैंक के अधिकारियों को अपमानजनक शब्द कहते हैं और उन्हें शारीरिक या मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं। राजनीति के क्षेत्र में बमबारी, दंगा, मतपेटी पर गलत तरीके से कब्जा करना और मतदाताओं को डरा-धमकाकर या किसी अन्य तरीके से प्रभावित किया जाता है और समाज के एक बड़े हिस्से में जो "रैगिंग" चल रही है, उसमें राजनीतिक नेतृत्व द्वारा पनाह लिए दलाल या दबंगई के जरिए

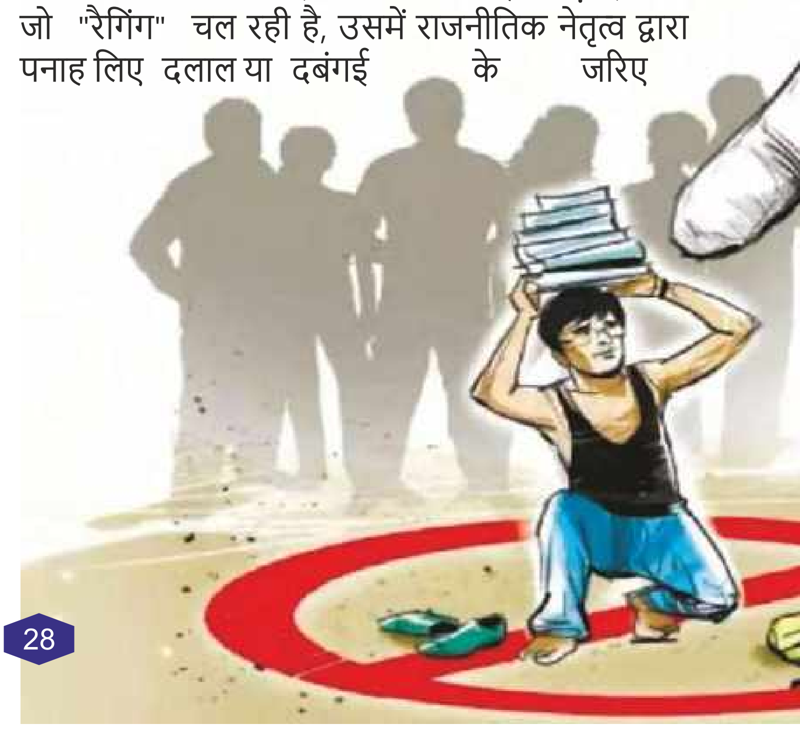

आतंक भड़काकर रोजी-रोटी कमा रहे हैं या अतिरिक्त कमा रहे हैं।

इस "रैगिंग" को तुरंत रोकने की जरूरत है। हम में से कई लोग "रैगिंग" नामक समाज के इस बदसूरत विकार की निंदा और विरोध करते हैं। न केवल छात्रों बल्कि समाज के सभी क्षेत्रों के लोगों को समाज के इस बुरे अभिशाप से लड़ने के लिए आगे आना चाहिए ताकि शैक्षिक और अन्य संस्थान को "रैगिंग" से मुक्त कर सकें। लेकिन रैगिंग को केवल मानवीय अपील, सामाजिक जागरूकता आदि करके नहीं रोका जा सकता है। इसे रोकने के लिए सरकार के रैगिंग विरोधी अधिनियम को उचित ढंग से लागू करना होगा और रैगिंग की कोई भी घटना होने पर रैगिंग विरोधी अधिनियम के अनुसार तत्काल कार्रवाई की जानी चाहिए। साथ ही, अपराधियों को अनुकरणीय सजा प्रदान की जानी चाहिए। इसके अलावा, डिजिटलीकरण के इस युग में सब कुछ पारदर्शी होना चाहिए। इसलिए सीसी टीवी कैमरा, शैक्षिक या अन्य संस्थानों और छात्रावासों के मुख्य बिंदुओं में स्थापित किया जाना चाहिए ताकि भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर गतिविधियों का सत्यापन किया जा सके।

अंत में, हमें अपने आप में ईमानदारी, नैतिकता और मानवता के विचार को अपनी स्वार्थी इच्छाओं से ऊपर रखना चाहिए। तब, हम अपने समाज से "रैगिंग" शब्द को हमेशा के लिए मिटाने में सक्षम होंगे ताकि उम्मीदवार अपने उज्वल भविष्य के लिए सही रास्ता खोज सकें। उपरोक्त मुद्दे पर लेखन का समापन जॉन मिल्टन के इन शब्दों के साथ किया जा सकता है: "मेरे अंदर जो कुछ भी अंधकारमय है, वह रोशन करो"।

अपूर्व कुमार घोष
अधीक्षक, राजस्व -III शाखा

अच्छी नहीं लगती

झुकता नहीं हूँ पर मुझमें गुरूर नहीं है।
दिन भर की थकानों से भी अब हम चूर नहीं हैं।
खूद अपने मुकद्दर को मैं अब कैसे बदल दूँ
कुदरत को ये शायद अभी मंजूर नहीं है।
हमने अपने हाथों से लिखा अन्धेरे को
ऐसा नहीं कि रौशनी भरपूर नहीं है।
अब प्यार की बातें हमें अच्छी नहीं लगतीं,
तारे बिन चांदनी रातें हमें अच्छी नहीं लगती।
निकल आती हैं आँसू बे-सबब, बे-वक्त भी अक्सर
ये बे-मौसम की बरसातें हमें अच्छी नहीं लगतीं।
किसी दिन सामने आओ हमारे रूबरू बैठो
ये टेलिफोन पर बातें हमें अच्छी नहीं लगती।
तसल्ली से कभी दो पल हमारे साथ बैठो तुम
ये रस्ते की मुलाकातें हमें अच्छी नहीं लगती।
खुशी का भी कभी पैगाम भेजो तो तुम्हें जानें
ये रंजो-गम की सौगातें हमें अच्छी नहीं लगतीं।
किसी दिन जीत ही लेंगे किस्मतों की बाजियां भी,
कि आये दिन की ये बातें हमें अच्छी नहीं लगतीं।

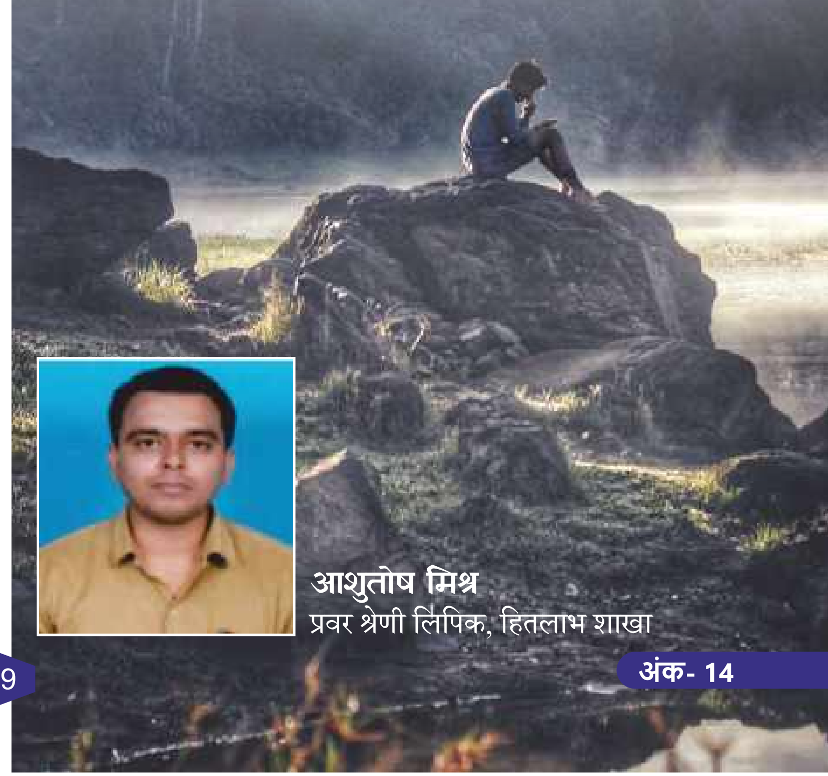

आशुतोष मिश्र
प्रवर श्रेणी लिपिक, हितलाभ शाखा

राजभाषा हिंदी ने लगभग दो लाख की जनसंख्या और
तीन पीढ़ियों को गरीबी रेखा के नीचे जाने से बचा लिया

सुनने में बात बड़ी अजीब सी लग रही होगी कि कोई भाषा भला कैसे किसी बड़े जनसंख्या या पीढ़ियों को गरीबी रेखा के नीचे जाने से बचा सकती है! पर है बड़ी सत्य और अकाट्य बात। कलकत्ता शहर के साथ जुड़े अधिकांश उपनगर जूट उद्योग के कारण जाने जाते हैं । इस जूट उद्योग के कारण ही शायद इन उपनगरीय अंचलों को 'जूट शिल्पांचल' के नाम से जाना जाता है। इसी शिल्पांचल का एक छोटा सा हिस्सा है नैहाटी उपनगर। इसी नैहाटी उपनगर का एक छोटा सा हिस्सा है गौरीपुर जिसकी वर्तमान आबादी लगभग दो लाख के आसपास होगी । किसी जमाने में (सन 1892 के आसपास) इस क्षेत्र में लगभग 115 एकड़ भूमि पर गौरीपुर जूट मिल फैला हुआ था। केवल जूट मिल ही नहीं, रंग बनाने वाली एक मशहूर कंपनी, कागज बनाने वाली कंपनी, चावल के धान से चावल निकालने के लिए सुप्रसिद्ध धान कल जिसे ग्वाला फाटक के नाम से जाना जाता है आदि उद्योग से परिपूर्ण था यह क्षेत्र । यहाँ बैरकपुर क्षेत्र का सबसे पुराना थोक का बाजार भी था । हालांकि बाजार आज भी है पर कालांतर में अधिकांश कल-कारखाने बंद हो गए। इन बंद कारखानों का भी बड़ा ही कर्णप्रिय इतिहास रहा है जिसपर फिर कभी फुरसत से चर्चा की जाएगी।

बदलते परिवेश और परिस्थितियों के कारण गौरीपुर जूट मिल सहित इस क्षेत्र के अधिकांश कारखाने बंद होने लगे । हालांकि कारखानों में लॉक-आउट, हड़ताल या तालबंध की घटनाएँ आम हैं पर जब यह बंद उस स्तर पर पहुँच जाए जब खुलने का नाम ही न ले तब रोजी-रोटी का संकट न जाने किस ओर ले जाए। रोजी-रोटी का संकट या तो व्यक्ति को पलायन के लिए मजबूर करता है या फिर अपराध जगत की ओर मुड़ने लगता है। चूंकि उन दिनों जूट मिल में मजदूरों की भी ये कुछ इतनी हो जाती थी कि भविष्य के लिए अधिक चिंतित होने की आवश्यकता न रहे और फिर भावी पीढ़ी यदि पढ़-लिख न सकी तो भी उसके रोजगार की चिंता नहीं रहती है। यह तो सुनिश्चित ही होता है कि उसे उद्योग में उसकी योग्यता के अनुसार रोजगार तो मिल ही जाएगा। शायद इसी आशा में सभी जी ही रहे थे कि अचानक यह तालाबंदी अनिश्चित काल के लिए लागू हो गई। आम जनता त्राहिमाम कर उठी। उत्तर प्रदेश और बिहार के प्रवासी मजदूर जिनका कहीं और आसरा था वे तो छोड़-छाड़ कर कहीं और चले गए पर जिनका कहीं और कोई आसरा नहीं था वे बिचारे कहाँ जाते! कुछ अपनी किस्मत को कोसते रहे और कुछ वैकल्पिक रोजगार की तलाश में दर-ब-दर भटकने लगे । इस तालाबंदी का सबसे बुरा प्रभाव उन युवाओं पर पड़ा जो अभी बारहवीं कक्षा में पढ़ रहे थे या फिर स्नातक में प्रवेश लेने की तैयारी कर रहे थे । इस तालाबंदी के प्रकोप से वर्तमान पीढ़ी जो रोजगार में थी उनका भविष्य तो खत्म ही हो चला था पर साथ ही युवा पीढ़ी के भी भविष्य पर

ग्रहण के बादल छाने लगे थे। यदि यह पीढ़ी भी अंधकार में भटक जाती तो यह बात तो तय थी कि इसके बाद वाली पीढ़ी तो रसातल में चली जाती।

प्रकोप के इसी क्षण देवता बनकर उभरे डॉ० सूर्यदेव शास्त्री जी। इन्हें यदि आदिपुरुष कहा जाए तो भी अतिश्योक्ति न होगी। उन्होंने इस क्षेत्र के युवा वर्ग को हिंदी की ओर मोड़ने का प्रयास किया । पढ़ने वाले हर युवा को उन्होंने राजभाषा हिंदी और इसमें रोजगार के अवसर के बारे में न सिर्फ जानकारी दी बल्कि लोगों को इस रोजगार की परीक्षा के संबंध में भी मार्गदर्शन किया । उनके सफल मार्गदर्शन में इस क्षेत्र के युवा वर्ग का रुझान हिंदी भाषा की ओर बढ़ा और फिर माध्यमिक कक्षा से ही बच्चे हिंदी अधिकारी और हिंदी अनुवादक बनने का सपना लिए उसी लक्ष्य पर बढ़ निकलते हैं। आज भारत में किसी भी राज्य के सरकारी संस्थानों में झाँककर देखें तो पाएंगे कि दस में से आठ हिंदी अधिकारी या अनुवादक नैहाटी अंचल से है। हालांकि इस नैहाटी अंचल का राजभाषा में नियोजन की दृष्टि से विस्तार हुआ है और अब इसके आसपास के क्षेत्र यथा कांकिनाड़ा, जगदल, हाजीनगर, कांचरापाड़ा आदि के युवा भी इस रोजगार में शामिल हो गए हैं। इस क्षेत्र से पहले हिंदी अधिकारियों का जो समूह निकला उनमें श्री शंभू प्रसाद और श्री विजय यादव जी का नाम प्रमुख है। कालांतर में इस क्षेत्र से राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में सेवार्थ कई जानी-मानी हस्तियाँ भी आईं। इन हस्तियों में डॉ० अमरनाथ, डॉ० बिमलेश कुमार सिंह, डॉ० इंदु सिंह आदि शामिल हैं जो आज भी हिंदी की सतत सेवा में लगे हुए हैं।

डॉ० सूर्यदेव शास्त्री जी के समान ही डॉ० इंदु सिंह भी इस क्षेत्र में राजभाषा हिंदी की एक ऐसी हस्ताक्षर हैं जिनका उल्लेख न किया जाए तो मेरी यह रचना अधूरी रह जाएगी । अपने व्यक्तिगत प्रयासों से उन्होंने जूट मिल क्षेत्र में 'मैत्रेय ग्रंथागार' के नाम से एक पुस्तकालय की स्थापना की

और उसका संचालन विगत कई वर्षों से निःस्वार्थ भाव से कर रही हैं। उनके इस पुस्तकालय में हिंदी साहित्य से लेकर हिंदी पाठ्यक्रम की विविध और अनमोल पुस्तकें उपलब्ध हैं जिसका लाभ छात्र उठाते रहते हैं। हालाँकि डॉ० इंदु सिंह जी को इस निःस्वार्थ सेवा के लिए कोई पद्म पुरस्कार तो मिलनी ही चाहिए थी पर शायद इन सबका लालच उनके मन में कभी आया ही नहीं। कभी पूछा जाए तो मुस्कुराकर रह जाती हैं।

एक गैर हिंदी प्रांत होने के बावजूद गौरीपुर ने जिस प्रकार से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन और विकास में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोग दिया है उसका कोई मोल शायद ही चुका पाए। नमन है इस क्षेत्र और उन राजभाषा सेनानियों को जिन्होंने बड़े ही त्याग और तन्मयता से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ाया और उनको हिंदी पठन-पाठन तथा रोजगार का माध्यम बनाने के लिए प्रेरित किया।

सार्जेंट बिनय कुमार शुक्ल
(सेवा निवृत्त भा.वा.से.)
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों के प्रति
भावनात्मक विचार

दशकों से, सरकारी नौकरियों को सुरक्षित रोजगार विकल्प के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके अलावा, मौजूदा प्रतिस्पर्धात्मक रोजगार क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता बढ़ी है। कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2014 से 22 करोड़ से अधिक आवेदकों ने सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन किया है और 7.22 लाख से अधिक को केंद्र सरकार में स्थायी पद प्राप्त हुए हैं। इन परीक्षाओं की तैयारी के लिए व्यापक समर्पण और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है, जो उम्मीदवारों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। सफल होने का दबाव और अपने विशाल पाठ्यक्रम के साथ विफलता का डर भावनात्मक संकट पैदा कर सकता है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उचित ब्रेक और आराम के बिना लंबे समय तक अध्ययन करना स्वास्थ्य समस्याओं को बुलावा है। सरकारी नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों को अक्सर अपनी तैयारी के दौरान चिकित्सा संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अधिकांश मामलों में उनका व्यस्त अध्ययन कार्यक्रम उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। सरकारी नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों के सामने आने वाली सभी स्वास्थ्य समस्याओं में से, खराब पोषण और व्यायाम की कमी सबसे आम है। अभ्यर्थी पढ़ाई में इतना व्यस्त हो जाते हैं कि उन्हें भोजन और नींद की कोई परवाह नहीं रहती। खान-पान संबंधी विकार सबसे आम हैं जो सीधे तौर पर उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और तैयारी को प्रभावित करते हैं। खान-पान संबंधी विकार गंभीर शारीरिक और मानसिक समस्याएं पैदा कर सकते हैं जो लिवर की समस्याएं, महिला मासिक धर्म में अनियमितता, हृदय की समस्याएं जैसी जीवन-घातक समस्याएं बन सकती हैं। गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं जैसे सूजन, इरिटबल बाउल सिंड्रोम (आईबीएस), अपच और कब्ज और एनोरेक्सिया और तीव्र तनाव जैसी मानसिक समस्याएं। कई अध्ययनों से पता चला है कि पढ़ाई का तनाव कुछ मामलों में गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर सकता है।

अवसाद (डिप्रेशन)

अवसाद (डिप्रेशन) एक गंभीर और बहुत आम बीमारी है जो सरकारी परीक्षा के उम्मीदवारों में देखी जाती है। डिप्रेशन से पीड़ित उम्मीदवारों में थकान, अनिर्णय, गुस्सा, रुचि की कमी, वजन में बदलाव, नींद न आना जैसे लक्षण आम तौर पर देखे जा सकते हैं।

अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ : कई शोधों से पता चला है कि लंबे समय तक बैठे रहने से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं, जिनमें मेटाबॉलिक सिंड्रोम, रक्तचाप में वृद्धि, मोटापा और अनियमित कोलेस्ट्रॉल शामिल हैं। अध्ययनों से यह भी पता चला है कि सबसे आम मानसिक बीमारी चिंता विकार है। डर, चिड़चिड़ापन, एकाग्रता की कमी, तनाव, सांस लेने में तकलीफ, चक्कर आना, पसीना आना, मांसपेशियों में दर्द और अनियमित दिल की धड़कन चिंता विकारों के सामान्य लक्षण हैं।

स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए उठाए जा सकने वाले कदम।

उम्मीदवारों को थोड़े-थोड़े अंतराल पर भोजन करना चाहिए। उनका भोजन खनिज, प्रोटीन और विटामिन का संयोजन होना चाहिए। उन्हें स्वस्थ आहार का पालन करना चाहिए जो इष्टतम ऊर्जा प्रदान करता हो।

उम्मीदवारों को हर दो से तीन घंटे के बाद एक ब्रेक शामिल करना चाहिए। इसका पालन करने से उन्हें गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याओं को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी।

- नियमित व्यायाम, योग और ध्यान करना सभी उम्मीदवारों के लिए जरूरी है।
- अवसाद से छुटकारा पाने के लिए मनोचिकित्सक की मदद ली जा सकती है।
- मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए इच्छुक उम्मीदवार परामर्श का लाभ उठा सकते हैं।
- वर्तमान परिदृश्य में सरकारी परीक्षा या किसी अन्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों को कई स्वास्थ्य समस्याओं से गुजरना पड़ता है जो उनकी परीक्षा की तैयारी और परिणाम पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। अतः सलाह दी जाती है कि सही अध्ययन कार्यक्रम का पालन करें, ऊपर चर्चा की गई सभी समस्याओं से दूर रहने के लिए खुद को मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बनाएं और ध्यान केंद्रित रखें।

मणिशंकर पाणि
प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा

नारी

नारी का हृदय बड़ा ही खूबसूरत स्थान है।
पुरुषों के जीवन का ताप,पाप, वेदना आदि हरती है।
पृथ्वी पर सर्वाधिक संभव केवल नारी शक्ति ही है।
घर-बाहर जहाँ भी हो, केवल नारी ही प्रधान है।
केवल नारी ही पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है।
स्त्री माँ, बहन, कन्या हर रिश्ते में जुड़ी है, समाहित है।
नारी का मन पृथ्वी पर सबसे कोमल होता है।
नारी कभी भी किसी पर निर्भर नहीं रहती है।
नारी न रहने पर नया कभी भैयादूज, ना ही होता रक्षाबंधन।
नए संपर्क, नया जन्म देती है नारी।
नारी हर प्रकार का कष्ट उठाती है।
जगत जननी, पिता के लिए राजरानी है।
नारी न होती तो पृथ्वी का आधार या नया जन्म नहीं होता।
पृथ्वी का प्राण तू ही हो शक्तिशाली नारी।

संतोना घोष
पत्नी श्री रतिकांत घोष

महिला सशक्तिकरण

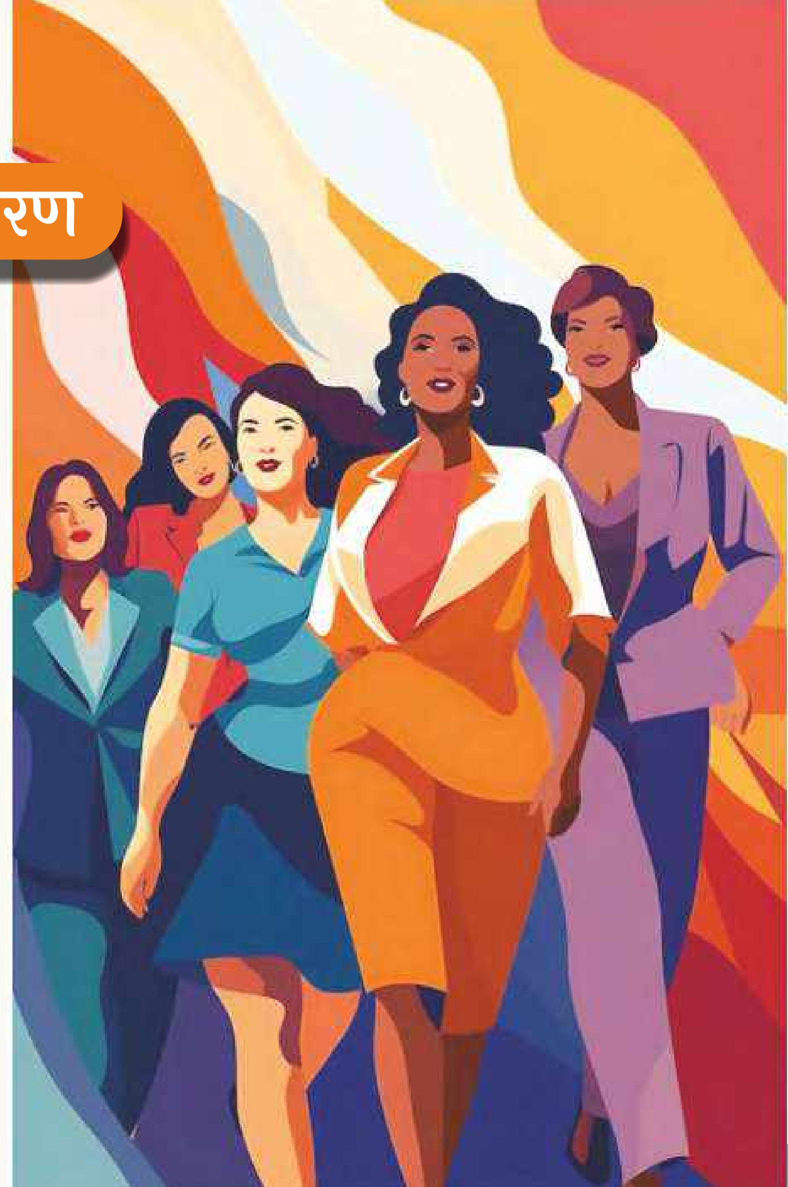

महिलाओं ने वर्षों से लैंगिक असमानता को चुनौती देने और पुरुष प्रधान समाज की जंजीरों से मुक्त होने के लिए अथक संघर्ष किया है। हालांकि, महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, वास्तविक लैंगिक समानता प्राप्त करने में अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। महिलाओं को सशक्त बनाना केवल उन्हें समान अधिकार और अवसर प्रदान करने के बारे में नहीं है, हालांकि यह निस्संदेह महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा वातावरण बनाने के बारे में है जहां महिलाएं अपने लिंग के आधार पर भेदभाव या सीमाओं का सामना किए बिना अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सकती हैं। जब हम महिलाओं को सशक्त बनाते हैं, तो हम वास्तव में परिवारों, समुदायों और पूरे देशों को सशक्त बनाते हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है लड़कियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना और यह सुनिश्चित करना कि उन्हें अपनी इच्छानुसार किसी भी कैरियर को आगे बढ़ाने के लिए समान अवसर मिलें। इसका मतलब है राजनीति, व्यवसाय और कला सहित समाज के सभी पहलुओं में महिलाओं के नेतृत्व और निर्णय लेने की भूमिकाओं को बढ़ावा देना। इसका मतलब है कि लिंग वेतन अंतर को चुनौती देना और कार्यस्थल नीतियों को बढ़ावा देना जो कार्य-जीवन संतुलन और महिलाओं को अपने करियर में प्रगति और सफल होने के लिए समान अवसरों का समर्थन करते हैं। लेकिन महिलाओं को सशक्त बनाना ऐसा काम नहीं है जो पूरी तरह से महिलाओं के कंधों पर आता है।यह एक सामूहिक जिम्मेदारी है जिसके लिए सभी की सक्रिय भागीदारी और समर्थन की आवश्यकता है - पुरुष, महिलाएं और पूरे समाज। इसके लिए पुरुषों को सहयोगी होने और लैंगिक समानता के लिए वकालत करने की आवश्यकता होती है, विषाक्त मर्दानगी को चुनौती देना और सभी रिश्तों में सम्मान और समानता को बढ़ावा देना। महिलाओं को सशक्त बनाकर हम एक ऐसी दुनिया बना सकते हैं जहां आधी आबादी की क्षमता पूरी तरह से महसूस की जाती है। यह एक ऐसी दुनिया है जहां महिलाओं को लिंग मानदंडों या दोहरे मानदंडों द्वारा सीमित या पीछे नहीं रखा जाता है। यह एक ऐसी दुनिया है जहां लड़कियां अपने स्वयं के मूल्य और क्षमताओं में विश्वास करते हुए बड़ी होती हैं, यह जानते हुए कि वे कुछ भी हासिल कर सकती हैं जो वे अपने मन को निर्धारित करते हैं। इसलिए, आइए हम महिला सशक्तिकरण के लिए खुद को प्रतिबद्ध करें। आइए हम बाधाओं को चुनौती दें और तोड़ें और एक ऐसे समाज का निर्माण करें जहां सभी महिलाओं का सम्मान किया जाए और उन्हें पनपने के समान अवसर दिए जाएं। हम सब मिलकर हर जगह महिलाओं के लिए एक बेहतर और उज्जवल भविष्य बना सकते हैं।

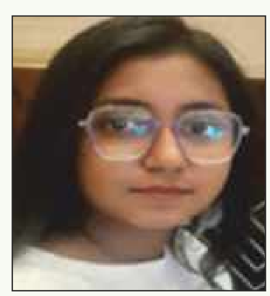

अन्वेषा सरकार
पुत्री श्री बिनय सरकार

छोड़ना ही तो कठिन है

साथ छोड़ जाना बड़ा ही आसान है पर जो चले गए उनको भूल पाना बहुत ही कठिन है।

एक साल बीतता जा रहा है, एक-एक करके जिंदगी से करीबी लोग कम होते जा रहे हैं।

जिसने पिछले साल सबसे पहले नए साल की शुभकामना दी थी, इस साल वह नहीं रहा। कोई अपनी मर्जी से चला गया है।

जाने को कोई मजबूर हो जाता है, न चाहते हुए भी, जिंदगी मजबूर कर देती है। पति, बच्चे, साफ-सुथरा फ्लैट, साड़ियों से भरी अलमारियाँ, स्कर्ट, कुर्तियाँ, मैचिंग आभूषण, हाथ से खरीदी गई पानी की बोतलें, टपरवेयर टिफिन बॉक्स, रसोई गैस ओवन, वाइप्स, सब कुछ पीछे छोड़ने के लिए घर की खिड़की में सावधानी से उगाया गया एलोवेरा का पौधा।

आज चाहकर भी उनकी आवाज पाने का कोई रास्ता नहीं है।

मुझे याद है, जब पापा जीवित थे, तो शाम को ऑफिस से लौटने के बाद मैं कुछ देर पापा के पास बैठता था और

जब वह उठते थे, तो पापा कहते थे, "मुझे और मत चूमो"।

और वो मेरी विदाई को देखता था, उन खामोश आँखों में थोड़ी देर और बैठने की चाहत होती थी।

मैं अन्य उपयोगी अथवा अनुपयोगी कार्यों में व्यस्त रहकर ऊब जाता था। आज इस वक्त खड़े होकर मैं सचमुच अपने पिता की आवाज सुनना चाहता हूं. कहीं नहीं... मैं वह आवाज फिर कभी नहीं सुनूंगा।

नियम है दूरी बनाना. शायद प्रकृति की यही प्रवृत्ति मनुष्य में है।

जिसके बिना मैं सोचता हूं कि मैं आज नहीं रह सकता, कल वह कहीं नहीं होगा।

जिन दोस्तों से रोज नहीं मिलते, बातें नहीं करते, चावल नहीं पचते, आज उनमें से कई तो सालों-साल नहीं मिलते।

आत्मग्लानि से भी दूरियां पैदा होती हैं, जो स्कूल के बाहर हर बात पर बात करता था, आज उसमें उम्र की गंभीरता है। उसने अपने माता-पिता को न बताना सीख लिया है।

मैं उन लोगों को वापस नहीं ला सकता जो अपनी सभी इच्छाओं से परे चले गए हैं। लेकिन जो वहां हैं, जिनसे प्यार था, वो किसी ग़लतफ़हमी के कारण दूर चले गए, हमने उन्हें वापस लाने की कोशिश नहीं की। मैं उन्हें उनके गिरे हुए जीवन के आखिरी कुछ दिनों की रोशनी में वापस लाने की कोशिश करता हूं। जब मौत आकर कहेगी...चलो, समय ख़त्म हो गया, समय ख़त्म हो गया, तब ग़लतफ़हमियाँ सुलझाने या प्रिय आवाज़ सुनने का समय नहीं रहेगा।

जिनके दिन कहानियों में, प्यार में, दया में, सहानुभूति में, साथ घूमने में बीते हैं, उनका कल्याण होगा। सबके बारे में। यदि आप जाने देते हैं, तो आप जाने दे सकते हैं। रहना कठिन है।

कौशिक बाला

सहायक, शाखा कार्यालय, टीटागढ़

"चलिए मुजफ्फरपुर..!!"

फुचका, कचरी, लिट्टी गरम समोसा मुजफ्फरपुर का,
ये चाट, पाव-भाजी
किसने परोसा मुजफ्फरपुर का ?
बीच सड़क पर खड़ी गाय
लोगों की भायें- भायें,
वो जाम, ठेले पे आम,
मोतीझील का शोर, बटलर का सन्नाटा,
अरे अघोरिया बाजार में है बाटा....
गोला पर मिले मशाला
ले...ले...ले... छींक डाला !
कल्याणी का गरम तवा
वो बांध पर की हवा,
मदनानी- मिस्कॉट मिठनपुरा की
मॉडर्न दुनिया,
पार्क में टहलता जोड़ा
MDDM के पास बिकती नथुनियाँ !
कचहरी का सख्त ट्रैफिक नियम,
शुक्ला रोड में बजे हारमोनियम !
कटही पुल पे लगा हाट,
जाम में फंसा आखाराघाट....

हरिसभा में राधारानी कन्हैया
पड़ाव पोखर पे उगती छठी मैया
साहू पोखर से बाबा गरीबनाथ,
कांवरिया चले साथ साथ
तजिया के साथ चले भाले तलवार,
उर्स पर सजा कम्बल शाह का मज़ार,
रामदयालु RBTS-RDS में लगा श्रावणी मेला
उधर मोर्चा संभाले LS अकेला ;
सिकंदरपुर, माडीपुर,
लक्ष्मी-चौक, ब्रह्मपुरा,
रसमाधुरी मिले महाराजा में,
MIT पे मिले मीट चूरा ;
चककर मैदान, बैरिया

भगवानपुर गोबरसही,
सुधा की रबड़ी, मिस्टी दही,
ये भी सही वो भी सही....

बैंक रोड, जूरन छपरा,
डॉक्टर का पर्चा, ढेरों खर्चा,

बुजुर्गों को सम्मान दें, बेटिकट यात्री ध्यान दें,
ट्रेन की बजती सिटी, आ रहा है टी.टी.ई.
भगीरथ होटल में लगा छौंक,
हमारे यहाँ भी है चांदनी चौक!
जेल चौक, पक्की सराय,
BMP से चले कन्हौली,
गर्मी का वार, पंखा बीमार,
बिजली खेले आँख मिचौली ;

श्याम-संजय-शकुंतला, ज्योति और अमर,
लेकिन बंद पड़ा है पार्वती और जवाहर !
सिनेपोलिस-आइनॉक्स में चले हॉलीवुड सिनेमा
और शान से चल रहा है शेखर में "कातिल हसीना" !!

नागरिक भूगोल, फिजिक्स-केमेस्ट्री,
अरे गौरवशाली है हमारी हिस्ट्री...
खुदीराम, आपको प्रणाम !
चला दी आज़ादी की आँधी,

कृपलानी- राजेंद्र प्रसाद LS में
शिक्षक,
भैया! वहीं ठहरे थे गाँधी!
संपूर्ण क्राति जेपी ने चलाया
बेनीपुरी के मेल से,
बिना प्रचार, बिना भाषण,
फर्नांडिस जीते जेल से ;

'चंद्रकांता' के लेखक देवकीबाबू
जन्मे,
यहीं दिनकर ने 'रश्मिरथी' रच डाला,
आचार्य शास्त्रीजी को लगे खोजने
रेल से उतर कर "निराला";
सिंकदरपुर मन में दो रंग पानी
फरदो का पानी काला,

क्या-क्या बताएं, कहाँ तक सुनाये ?
ये ख़त्म न होने वाला !!

सरैयागंज का टावर बिजी,ओवरब्रिज तीन- तीन,
शेरपुर गुमटी से मालगाड़ी गुजरी,
थक गए डिब्बे गिन-गिन ;
मॉर्निंग शिफ्ट स्कूल चले,
गर्मी में आंधी- धूल चले,
डिज़्नीलैंड लगा है, ओरिएंट क्लब में रात करें,
अरे गर्मदिल शहर में सर्दी की क्या बात करें?

बरसात की है अलग कहानी,
थोडी वर्षा, घुटने भर पानी,
पर गंडक का पानी जब बढ़ता है,
हाथ कलेजे पर रहता है....

मच्छर सताए मुजफ्फरपुर का, लीची बुलाये मुजफ्फरपुर की
बांध डराए मुजफ्फरपुर का याद आ जाये मुजफ्फरपुर की,
स्टाइल हमारा मुजफ्फरपुर का स्माइल हमारी मुजफ्फरपुर की,
लहजा हमारा मुजफ्फरपुर का प्रोफाइल हमारी मुजफ्फरपुर की
बचपन- यौवन मुजफ्फरपुर का;
अनोखा जीवन मुजफ्फरपुर का... ।

प्रियेश कुमार
बहु कार्य कार्मिक, प्रेषण अनुभाग

गीत

इक बार तू कान्हा आ जा ना

दिल के सूने इस मन्दिर
प्रेम का दीप जला जा ना,
एक पथिक को राह दिखाने
इक बार तू कान्हा आ जा ना।

मैंने सुनी है तेरी बातें
निर्मोही-सा मित्र है तू,
सब का होकर; सब का नहीं है
इसीलिए तो पवित्र है तू।
अपनी बातें सिखलाने को; जग में ख़ुद को दिखलाने को!
नव-ज्ञान की गंगा बहा जा ना।
इक बार तू...

कलयुग के पल-पल का प्रतिपल
तेरी जिम्मेदारी है,
हर युग में आऊंगा कहा था
यह क्यों तुझ पर भारी है।
मात-पिता को मुक्ति दिलाने; बहनों के फिर चीर बढ़ाने
हर ओर तू आकर छा जा ना।
इक बार तू...

भक्त भी तू है; भक्ति भी तू है
मोह-विमोह का साधन तू,
तू है मूरत; तू है अमूरत
हर दिल का अभिवादन तू।
व्यथित हृदय का दर्द मिटाने; धर्म की फिर-से लाज बचाने!
फिर मैदान सजा जा ना।
इक बार तू...

यहाँ नहीं कोई शांति-दूत अब
तुझको ही आना होगा,
विदुर सहित अब सारे चुप हैं
आकर समझाना होगा।
सब की चेतनता को जगाने; धर्म-दीप की अलख जगाने!
तू अपना चक्र घुमा जा ना।
इक बार तू...

रवि कहर
बहु कार्य कार्मिक, राजभाषा शाखा

युद्ध नहीं करना बेशक़ तू
"कहर" को बस साधे रहना,
मन ये अगर भटके रण से तो
अपने संग बांधे रहना।
गीता का नव-पाठ सिखाने; फिर-से अपना रूप दिखाने!
इक अर्जुन पुनः बना जा ना।
इक बार तू...

गरीबी

चलती ठंडी हवाओं में सिकुड़ता हुआ नंगा बदन।
बारिश की बौछारों में ठिठुरता हुआ तन।
गरमियों की तपिश में झुलसता हुआ यौवन।
रोटी के लिए लपलपाते जीभों की तपन।

यह बात तो दिल पर बहुत भारी है।
गरीबी तो सबसे बड़ी बीमारी है।

तपते भूखे बच्चों की सिसकियाँ हर जगह फैलती है।
कूड़े-कचरे में लिपटा बचपन हर जगह चुभती है।
बीमारियों का प्रलय भी पहले इन्हीं पर फैलती।
अंतिम विदाई में कफन भी इनसे मुँह मोड़ती है।

यह बात तो दिल पर बहुत भारी है।
गरीबी तो सबसे बड़ी बीमारी है।

कहीं अनाजों से भरे गोदाम, कोई अटारी नहीं।
निकला हुआ बड़ा पेट, चलना भी दुश्वारी है।
पचे नहीं भोजन, सुबह टहलना भी जारी है।
बड़े-बड़े धन सेठ यहाँ, बी. पी.एल. कार्डधारी हैं।

यह बात तो दिल पर बहुत भारी है।
गरीबी तो सबसे बड़ी बीमारी है।

आखिर कब तक गरीबों की जवानी
अमीरों के दर झोली जानी है।
कब तक खाली पेट को
गमछे से बांधी जानी है।
कब तक भूख से सूखे ओठों को,
जीभों से पोछी जानी है।

कब तक अमीरी-गरीबी की दीवार
बनाई जानी है।
यह कहानी तो बरसों-बरस पुरानी है।
यह बात तो दिल पर बहुत भारी है।
गरीबी तो सबसे बड़ी बीमारी है।

धर्मपाल कुमार
बहु कार्य कार्मिक, शाखा कार्यालय, आतपुर

शब्दों का खेल

दिलशाद अली
सहायक, प्रशासन शाखा

अंग्रेजी भाषा में आपने होमोनिम जिसका अर्थ है मिलते जुलते उच्चारण वाले शब्दों के बारे में अवश्य पढ़ा होगा पर अन्य भाषाओं में भी ऐसे काफी शब्द हैं जिनका प्रयोग यदि गलत संदर्भ या स्थान पर हो जाए तो काफी गड़बड़ी होने की संभावना होती है। जाने अंजाने में हमलोग कई बार वाक्य को सुंदर बनाने के लिए उर्दू के शब्दों का हिंदी के वाक्यों में प्रयोग करते हैं पर शायद ही कभी इस बात का विचार करते हैं कि जो शब्द हम प्रयोग में ला रहे हैं वे क्या वास्तव में उस संदर्भ और वाक्य के अनुकूल हैं? आज ऐसे ही कुछ शब्दों का गुच्छा लेकर आया हूं जिनका प्रयोग गलत संदर्भ में हो तो गलत अर्थ दे सकता है। आइए ऐसे शब्दों का विवरण देखा जाए।

शेर	कविता
शेर	lion
सहर	सुबह का वक्त
सहर	रेगिस्तान
कमर	कमर(waist)
क़मर	चंद उदाहरण, मेरे रश्के कमर..
सोना	sleeping
सोना	gold
हलका	क्षेत्र area
हल्का	light weight
सदा	आवाज
सदा	always
बैर	दुश्मनी
बैर	plum एक जंगली फल
नजर	gift isse नजराना बना है
नज़र	दृष्टि
फन	skill
फन	snake hood
सफर	यात्रा (journey)
सफर	शून्य(zero)

बिल	hole छिद्र
बल	ताकत
पारा	mercury
पारा	हिस्सा
पीर	सोमवार
पैर	leg
चीन	देश का नाम
चैन	सुकून
अर्ज	चौड़ाई
अर्ज	जमीन
शक	doubt
शक	फटा हुआ
कसरत	अधिक मात्रा
कसरत	वर्जिश exercise
अमल	उम्मीद
अमल	पालन करना
अयाल	घोड़े के कंधे के बाल
अयाल	बच्चा
कद	height
कद	घर या मकान

कुछ यादें

वह दिन भी क्या दिन था जब तुम मेरे नजरों के सामने से गुजरी थी । उस पल तो ऐसा लगा कि सारा जहाँ "तुम्हारे सामने थम सा गया है। आकाश में उड़ते सारे पंक्षियों के पंख हिलना बंद हो गये। मेरी नजर सिर्फ तुम पर ही टिकी हुई थी। पीछे से हजारों अवाजें मुझे पुकार रही थी पर वे हजारों अवाजें भी मेरे कानों पर जूँ तक रेंगने नहीं देंगे। बस अचानक से जब तुम मेरे नजरों से ओझल हो गयी। तब पता चला कि मेरा दोस्त मुझे पुकार रहा था और आकर पूछने लगा, "क्या हुआ कितनी बार तुमको पुकारा,तुम कोई जवाब नहीं दिये।" पर मैंने उसे कुछ नहीं कह कर टाल दिया। बस अब क्या था, सारा समय सिर्फ तुम ही यादों में आती रहती हो, न समय का पता न खाने पीने का अब तो दोस्तों से भी मिलना-जुलना लगभग बंद ही हो गया। लगता है कि मेरी दुनिया तो जैसे बदल चुकी हो अब तो दोस्त भी बुलाते है तो तुम्हारे ही ख्यालो में ही खोया रहता हूँ । बस इंतजार इस बात है कि कि अगली बार तुमको मिल पाये, मैं पक्षिओं, हवाओं, बादलों से बातें करता रहता हूँ कि अगली बार वो जब मिलेगी तो कम से कम नाम ही पूछ लूंगा। उस समय तो मोबाइल भी नहीं चलती थी कि उसका मोबाईल नम्बर ले लिया जाए! हर पल मेरी नजरें बस उसी कि खोज में भटकती रहती है। ऐसा लगता है कि वो मेरी दिल में कुछ तरह इस तरह से गढ़ गयी है जिसको निकालना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

उस समय पापा के डर से मुझे रोजाना स्कूल जाना पड़ता था। पर मेरा ध्यान तो पढ़ाई सें लगता ही नहीं था। मास्टर जी क्या पढ़ा कर चल दिये पता नहीं पर स्कूल में एक चीज पर ज्यादा ध्यान रहता था। जब क्लास की अंतिम घंटी के समय मास्टरजी कहानी सुनाते थे जिसको मैं बहुत ही ध्यान को सुनता था और वो कहानी मेरे दिलो दिमाग में बस जाती थी। मैं अपनी कक्षा में सबसे भोंदू विद्यार्थी के रूप मे जाना जाता था, उसमें और भी थे जो पढ़ने में मेरे ही जैसे थे। मेरे विद्यालय में एक खासियत थी कि हर एक सप्ताह में एक बार परीक्षा होती थी जिसमें मैं भी देने जाता था। पर, हमलोग अनुतीर्ण ही होते थे, जो अनुतीर्ण होते थें, उसको पीटा जाता था। जिसके जितना कम अंक, उतना ही ज्यादा पीटा जाता था। मेरे कक्षा में केवल पाँच ही विद्यार्थी ऐसे थे जो पढ़ने में तेज थे।

जब गर्मी की छुट्टी हो चुकी थी तब मैंने सारा ध्यान खेलकूद पर लगा दिया। मुझे क्रिकेट खेलने में बहुत आनन्द आता है। सभी दोस्तो के साथ मिलकर खेलने का प्लान बनाया करता था। गर्मी में लू चाहे जितनी भी तेज क्यों न हो, घर से कोई बहाना बनाकर निकल ही जाता था। सभी दोस्त मसौढ़ी गाँधी मैदान में एकत्रित होते थे और खेल शुरू हो जाता था। एक दिन कि बात है जब हमलोग दोपहर की घूप में खेल रहे थे कि हमारे स्कूल के हेड मास्टर साहब ने हमलोगों को पकड़ लिया और सभी को पकड़ कर हमारे ही

बैट से खूब मारा। हमलोग कैसे भी कर के वहाँ से भागे।

एक दिन की बात है जब मैं अपने घर के काम से बाहर निकला तो थोड़ी दूर जाने के बाद वो मिल गयी जिसकी तस्वीर मेरे दिल में चुभ गयी थी। मैं उसे देखता ही रह गया था कि अचानक कोई उसे पुकारा और वो वहाँ से रामी काली गली में चली गयी। मैं उसी के पीछे वाली गली में घुसा पर वह कहीं नहीं मिली। पता नहीं मुझे भ्रम था या हकीकत। मैं उसी के बारे में सोचते-सोचते आगे निकल गया। तभी मेरा नाम लेकर किसी ने पुकारा मैं इधर-उधर देखने लगा और सोचा कौन है तभी पीछे देखा, मेरा दोस्त मुझे पुकार रहा था। मैने बोला हाँ क्या बात है?

दोस्त :- कहाँ जा रहे हो?

मैंने बोला - घर में राशन खत्म हो गया था दोस्त, वही लाने जा रहा हूँ।

मैंने भी पूछा, 'तुम कहाँ चल दिये।'

दोस्त :- पर राशन की दुकान तो उस तरफ है। इधर कहाँ चले जा रहे हो। मैंने कुछ देर सोचा फिर कहा, 'नहीं ऐसे ही सोचा इस गली में शायद दुकान हो तो यहाँ से मैं ले लूँ। शायद उससे सस्ती रेट पर मिल जाय।' फिर मैं सामान लेकर घर चला गया पर मैं उसी के सोच में डूबा हुआ था कि इस बार कब मुलाकात होगी। या अबकी बार मिलेगी तो मैं उससे बातें जरूर करूँगा और नाम जरूर पूछेंगे। गर्मी की छुट्टी में हमलोगों को पापा गाँव ले जाते थे। वहाँ का मौसम बहुत ही सुहावना होता था। वहाँ के खेतों में हरियाली जैसे मेरे मन को भाता था। हर समय गावों के खेतों में घूमा करते थे दोस्तो के साथ। यहाँ जो मिलता था वहाँ शहर में नहीं मिलता था। गर्मी में आम के पेड़ पर आम आदि के गुच्छे देखकर मन लालच से भर जाता था। सोचा एक ढेला मारें पर आम की रखवाली करने वालों से डरते थे। एक समय मैंने खेतों से बूँट(चने की झाड़) कबार(उखाड़ना) लिया। उस खेत के मालिक ने मुझे देख लिया और उसने मुझे मारने के लिए खूब दौड़ाया। मैं भागते-भागते खेतों के दूसरे खंदे(खंड) में पहुँच गया पर मैं उसकी पकड़ में नहीं आया। उस समय मैं दौड़ने में तेज हुआ करता था। कभी कभी तो दोस्तो से भिड़ने की बाजी लगती थी तब मैं ही जीतता था। दिन भर बाहर ही खेलता-कूदता रहता था। उस समय अहरी पोखरी में पानी सूखा हुआ था। पेड़ पर चढ़ना, डोल पत्रा खेलना, गुल्ली डंडा खेलना क्या शानदार था वह बचपन। खेलने से मेरा मन भर जाता था। जब शाम का समय होता था तो घर पे वापस लौट जाते। मैं रात में दादा-दादी के साथ सोता था और राजा-रानी वाली कहानीयाँ दादा के मुँह से सुना करता था। फिर कब नींद आ जाती थी पता ही नहीं चलता था। अब गर्मी की छुट्टी खत्म हो चुकी थी लेकिन हमको लगा कि अभी तो आये ही थे, इतनी जल्दी खत्म हो गयी। अब हमारा घर में मन नहीं लगता था। मानों मेरा शरीर घर में हो और मेरा मन सिर्फ उसी के ख्यालो में इधर-उधर भटक रहा है। मेरे मन के भावों में वो बदल की छाँव में रंगीन बादलों की तरह कब आती-कब चली जाती पता नहीं चलता। वो ककड़ाती धूप की तरह थी जिसे देखकर मैं पसीनो से नहा लेता था। फिर वो गाड़ी पर चढ़ गयी जो पटना की ओर जा रही थी। मैं मन को उदास लिए घर की ओर चल दिया। मुझे लगता था कि शायद वह मुझे देखी होगी? मैं सोचता था शायद एक बार मुझे उसने देखा हो! हो सकता है कि उसने देखा हो। फिर लगता कि मैं यूं ही समय नष्ट कर रहा हूँ। न तो वह मुझे मिलेगी और न ही कभी मैं उसको मिल पाउंगा। सवाल गूंज रहा है। मेरा मन के हालात को कोई नहीं समझ सकता था। मेरे मन मे अनेकों शायरी पनप रहीं थी जिसका आगाज नही कर सकता था किसी के सामने, अनेक शायरी में से एक शायरी ये थी।

"जिस दिन से मेरे मन मे बसी हो मानों मेरी आखें तुम्हे ही खोजने में लगी है।" उस पल को याद करके मैंने अपने आप को खो दिया है। अब बस उस दिन का इंतजार है जिस दिन तुम्हे अपना बना लूँगा। मैं उसी के सपनों मे इधर उधर गलियों में जाता था कहीं वो हमें मिल जाये तो बातें होगी। मैंने घूमते-घूमते स्टेशन पर चला गया था। बहुत लोग गाड़ी का इंतजार कर रहे थे। वहाँ स्टेशन का नाम तारेमा या वहाँ काटुन वाला टिकट मिलता था। मैं तो स्टेशन पर बैठे हुए सोच ही रहा था कि वह मुझे तीसरी बार दिख गयी। मैने सोचा यही मौका है बात करने का। उसके नजदीक गया वह मेरे आगे जा रही थी को और उसके पीछे से बोला, 'हलो' पर मै इतना डर हुआ था कि मेरी अवाज शायद उसकी कानों तक न पहुँच पाई। वह आगे जाती रही फिर वह अपने रिश्तेदारों के साथ स्टेशन पर मेरे सामने बैठी रही फिर भी बोलने की मेरी हिम्मत नहीं हुई।

मेरे दिल में तुम ही थे और मेरी दिल की धड़कन में भी तुम ही हो । मेरे ख्वाबों की खुशबू में तुम, हो। मेरी पलकों की छाँव में तुम हो। मेरे खवाबो में तुम हो, मेरी चाहत में तुम हो, मेरी हर हरकत में तुम हो, तुम हो तो मैं हूँ, तुम नहीं तो मैं कुछ भी नहीं। मेरा अकेलापन तुम हो। मेरी सपनों मे तुम हो, मेरी यादों में तुम हो। ये सब बातें उसी के बारे में मैं अपनी यादों में सोच रहा था जो अतिंम बार स्टेशन पर देखे थे। उसके बाद वो आज तक नहीं मिल सकी। अक्सर जब भी अकेला होता था तो उसकी खूब याद सताने लगी थी। पर अब क्या था वो तो अब मिलने से रही। बस हम अपने में

मगन हो अब कोचिंग कोचिंग कि पढ़ाई में लग गए। इसके साथ ही लगा कि धीरे-धीरे उसकी याद मिटने लगी। अब तो पढ़ाई में अपना दिल लगाना था क्योंकि पापा ने बहुत खर्चा किया था। अगर नहीं पढ़ेंगे तो बहुत डांट सुनना पड़ेगा इसलिए सब चिंता भुलाकर अपने पढ़ाई पर ध्यान देने लगे।

उस समय मै नौवीं में पढ़ता था। परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। अब दसवीं में गया था। मुझे मैट्रिक परिक्षा से बहुत डर लग रहा था। मैने कोचिंग क्लास जॉइन कर लिया। दसवाँ का विषय मेरे लिये बहुत कठिन साबित हुआ। नौवा तक तो बिना पढ़े-लिखे पास हो गया था क्योंकि वहाँ की परीक्षा, में सर पास कर देते थे पर मैट्रीक की परिक्षा बहुत ही कठिन होती थी। 700 नम्बर का होता था। सात विषय और मुझे तो मैथ के सिवा कुछ नहीं आता था। मैंने बहुत कठिन मेहनत करना शुरू कर दिया था। मैने सभी विषय को रटना शुरू कर दिया। दिन-रात रटने में लगा दिया था। उस समय बिहार बोर्ड के अध्यक्ष बहुत ही कड़क मिजाज का था ये सुनकर और डर लगने लगा। घर के लोगों को मुझसे बहुत उम्मीद थी। पापा गाँव से फिर मसौढ़ी ले आये और वही काम एक बार फिर से। 8 बजे सुबह उठना और स्कूल जाना और मास्टर जी का लेक्चर सुनना। मैं क्लास में सबसे पीछे बैठता था। और जो भी टीचर आते में मै अपना मुन्डी नीचे कर लेता था ताकि मास्टर जी देख न ले। यह डर लगा रहता था कि अगर मास्टरजी देख लिए या हमारी नजर उसकी नजर से मिल गई तो एक सवाल जरूर पूछ लेगें और निश्चय ही मैं नहीं बता पाऊँगा। ज्यादा डर तो तब लगता था जब मास्टर जी का दिया होमवर्क पूरा नहीं हो पाया था। जो भी काम करके नहीं लाता था उसको बेंच पर खड़ा करवा दिया करते थे। उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ पर मेरा नंबर आने तक क्लास की घंटी बज गई। भगवान से मनाता था की मेरे तक पहुंचने से पहले घंटी बज जाय। उस समय एक सर थे जो क्रिकेट स्कोर सुनाते थे, नाम था देवेन्द्र। वो कहानी भी सुनाते थे। उसकी कहानी में दिल लग जाता था और क्रिकेट के खिलाड़ी के बारे में बताते थे। मुझे दिलचस्पी होने लगी और क्रिकेट खेलने लगा। क्रिकेट मेरी पहली चाहत होने लगी। लेकिन पहले मैं शक्तिमान का बहुत बड़ा फैन था। उस समय मेरे पास T.V. नहीं होती थी पर मैं मकान मालिक के घर जाता था शक्तिमान देखने। मकान मालिक के पास बहुत पैसा था। उनके पास टेलीफोन भी था। जब भी बात करना होता था तो वहीं से बात होती थी। मेरे परिवार में उनका नम्बर दिया जाता था। शक्तिमान को देखने के लिए मैं कहाँ-कहाँ नहीं जाता था। मेरे मन में शक्तिमान की ही हौबी (Hobby) बनी रहती थी और रविवार का इंतजार रहता था कि कब आये और शक्तिमान देखू!

2005 का वर्ष था जब बिहार में राष्ट्रपति शासन लगा हुआ था। उसी समय मेरी मैट्रीक की परीक्षा भी हुई थी। याद है मुझे उस समय पटना में सिपाड़ा के पास पापा के कोई परिचित थे, उनके परिवार के पास रुका था। मेरा सेन्टर T.P.S College. पटना में दिया था। मै सभी विषय तो रट कर ही गया था। मेरे अन्दर बहुत डर समाया हुआ था पर मै चोरी नहीं करता था। जो आता था वह लिखता था पर मेरे टिउसन के सर बोले थे कि सब पेपर भर के आना है कुछ आए चाहे न आए। मैं भी वही करता था। कुछ आए चाहे न आए पेपर पूरा करता था। पेपर एक भी नहीं छोड़ा था। कुछ न कुछ लिख दिया था। जब Science का पेपर था तो मजिस्ट्रेट चेकिंग हुआ था। खुद बिहार बोर्ड के चेयरमैन आये थे और मेरा काफी उठाकर चेक किए। मैं डर के मारे कुछ नहीं बोल रहा था, एक समय ऐसा लगा मुझे परीक्षा से 3 साल के लिए निष्कासित न कर दे। उस दिन लगभग 10-15 लड़के को 3 साल के लिए बैन कर किया जा चुका था। मेरा कॉपी चेक करने का कारण यह था कि मेरे सामने एक चिट-पुर्जा पड़ा हुआ था वह चिट उठाकर मेरे काँपी से मिलाकर देख रहे थे। लेकिन कुछ नहीं मिला तो कुछ नहीं किये मिलता भी कैसे मैं तो अपने मन से लिख रहा था। परीक्षा, समाप्त हो चुकी थी पर संस्कृत की परीक्षा उस समय रद्द हो गयी थी। फिर बाद में देना पड़ा। परीक्षा खत्म होने के बाद जो खुशी मिली मानो सब कुछ करने की आजादी मिल गई, पर कब तक? अब समय आ चुका था रिजल्ट का, सब दोस्तो के मन में डर था कि कहीं फेल न हो जाय मुझे भी था पर मैंने 2nd div से पास किया था 409 नम्बर आये थे। 11 नम्बर से थर्ड डिवीजन आने से बच गया।

अप्पू कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, प्रशासन शाखा

कृष्ण भक्ति एवं इस्कॉन

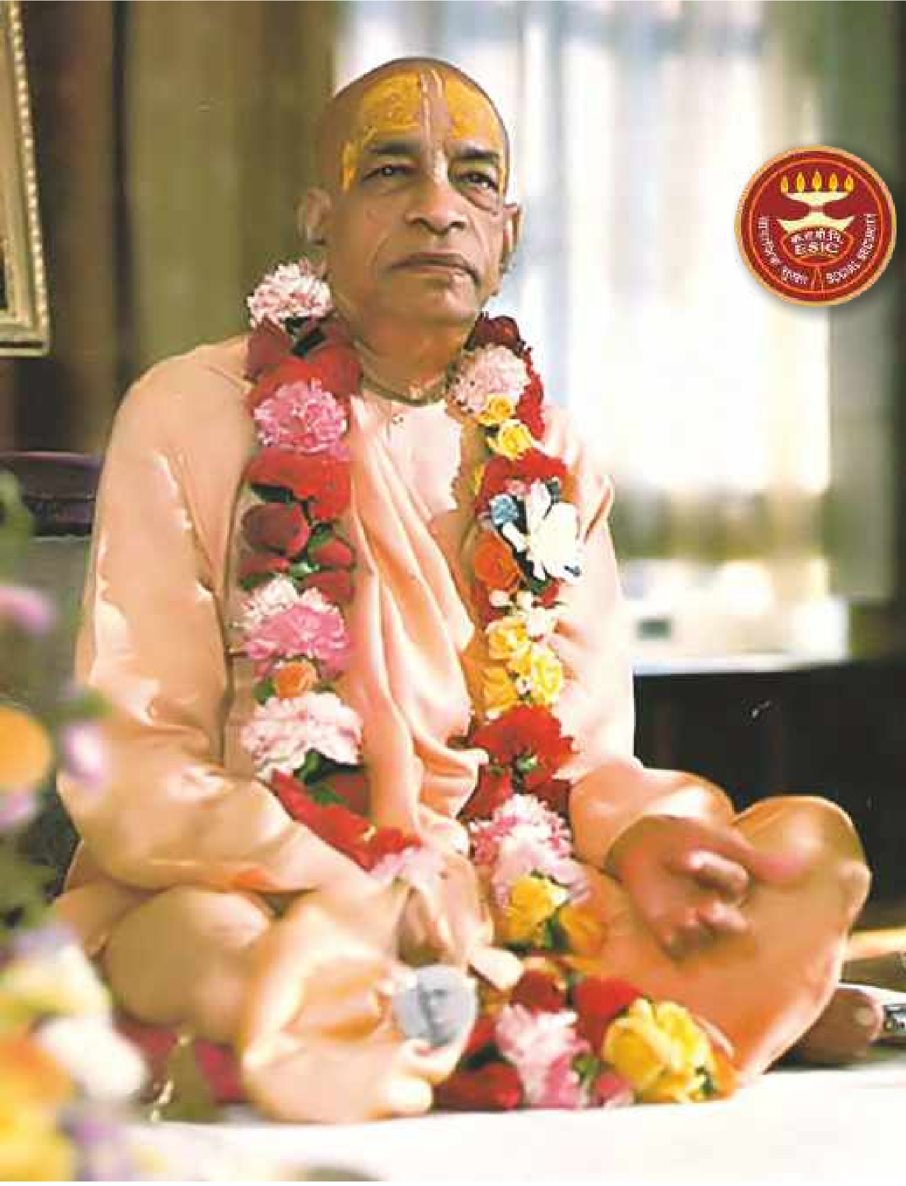

इस्कॉन अर्थात इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ कृष्णा कॉन्शियसनेस और यदि इसे हिंदी में कहें तो यह अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ है। यह एक ऐसी संस्था है जो पिछले 97 वर्षों से श्री चैतन्य महाप्रभु की शिक्षा और कृष्ण भावनामृत के प्रचार और प्रसार में लगी हुई है।

कृष्ण कृपाश्री श्रील अभय चरणारविन्द स्वामी प्रभुपाद सन् 1967 में अमेरिका में अपने कुछ कृष्ण भक्त शिष्यों की सहायता से इस्कॉन की स्थापना किये।

श्री गौर मोहन दे और रजनी देवी के घर पुत्र के रूप में एक सितंबर सन् 1896 को अभय चरण दे ने जन्म लिया।

आगे चलकर अपने गुरुवर श्रील भक्ति सिद्धांत स्वरसती ठाकुर प्रभुपाद के आदेशानुसार समग्र विश्व मे हरिनाम के प्रचार के लिये जुड़ गए। पिता गौर मोहन दे चाहते थे कि उनका पुत्र परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त बन जायें पर माता रजनी देवी की इच्छा थी कि उनके पुत्र पढ़ लिखकर विख्यात बैरिस्टर बनें।

पिता की प्रेरणा से अभय बालपन से ही कृष्ण भावनामृत की ओर आकर्षित थे। युवावस्था में सन् 1922 में श्रील प्रभुपाद को पहली बार 66 गौड़ीय मठों के संस्थापक श्रील भक्ति सिद्धांत श्री ठाकुर से भेंट हुई।

प्रभु के अनुप्रेरण और प्रोत्साहन से सरस्वती महाराज ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त युवक अभय से महाप्रभु के वचनामृत के प्रचार-प्रसार के लिये प्रोत्साहित किया।अभय ने इस बात की गांठ बांध ली और सन् 1933 में श्री अभय जी ने सरस्वती महाराज से दीक्षा लिया और गौड़ीय मठ में सहायता और सेवदान करते रहे।उन्होंने वैदिक शास्त्र के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ श्रीमद्भागवत गीता के सरलीकृत और प्रांजल भाष्य की रचना की तथा सन् 1944 में उन्होंने अकेले ही Back to God नामक एक अंग्रेजी पाक्षिक पत्रिका निकालना शुरू किया। पत्रिका की रचना खुद ही टाइप करते थे,प्रूफिंग करते तथा मिलों पैदल चलते हुए खुद ही इसका वितरण करते थे। वह पत्रिका आज भी विश्व के तीस भाषाओं में प्रकाशित हो रही है तथा इसे उनके शिष्यगण नियमित रूप से प्रकाशित कर रहे हैं अर्थात अब यह दैनिक प्रकाशित हो रही है। श्रील प्रभुपाद के दार्शनिक ज्ञान और उनकी स्मृति में गौड़ीय समाज ने उन्हें सन् 1947 में भक्ति वेदान्त की उपाधि से विभूषित किया।

54 वर्ष की उम्र में सन् 1950 में उन्होंने सांसारिक जीवन की मोहमाया त्याग कर सांसारिक जीवन से सेवानिवृत्ति ले ली और सन्यास धारण कर वृन्दावन के

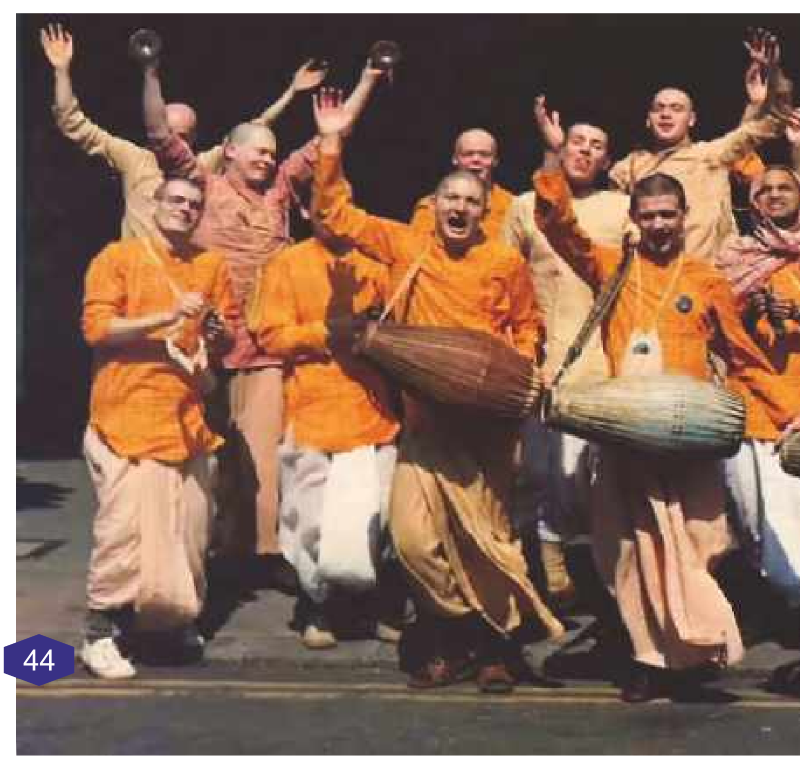

प्राचीन राधा दामोदर मंदिर में एक छोटे से कमरे में रहने लगें । साथ-ही, विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन और रचना का कार्य करने लगे। उनके रचित विभिन्न ग्रंथों में श्रीमद्भागवत यथारूप और 12 स्कंदों का भागवत के रूप में सुंदर और सरलीकृत अनुवाद आज सम्पूर्ण विश्व के हजारों लोगों को कृष्ण भक्त बना रही है तथा इसमें कोई संदेह नहीं है कि आनेवाले समय मे इसका प्रचार विपुल मात्रा में बढ़ेगा। श्रील प्रभुपाद ने भारतीय दर्शन और विभिन्न धर्मग्रंथों का अनुवाद तथा भाष्य बड़े ही सरलीकृत रूप में प्रस्तुत किया है । उन्होंने सहज, सरल और बोधगम्य लगभग 80 ग्रंथों की रचना की है। अपने जीवन काल मे अपने परम आराध्य गुरुवर की इच्छा पूर्ति के लिये 70 वर्ष की उम्र में एक मालवाहक अर्थात कार्गो शिप में सन् 1965 में उन्होंने अमेरिका की यात्रा की तथा इस यात्रा में उन्होंने अत्यंत कष्ट सहकर भी कृष्णभक्ति का प्रचार प्रारम्भ किया।

सन्1966 के जुलाई माह में एक अनुष्ठान के दौरान इस्कॉन प्रतिष्ठा की केवल घोषणा मात्र से उन्हें अपार कष्ट उठाना पड़ा तथा सन् 1977 के नवम्बर माह के दौरान इस नश्वर शरीर के त्याग से पूर्व पूरी पृथ्वी पर 108 इस्कॉन मंदिरों की स्थापना तथा कृष्णभक्ति के प्रचार के लिये 14 बार विश्व भ्रमण कर उन्होंने श्रीमन महाप्रभु के वाणी का प्रचार किया तथा महाप्रभु की भविष्यवाणी कि 'पृथ्वी पर जितने भी ग्राम हैं, सर्ववत प्रचलित होगा मेरा नाम' वास्तव में सार्थक होना प्रारम्भ कर दिया। आज श्रील प्रभुपाद की गीता यथारूप 92 भाषाओं में समग्र पृथ्वी पर प्रकाशित होती है तथा पढ़ी जाती है। चीन से लेकर पाकिस्तान तक के विभिन्न धर्मावलंबी तथा अन्य लोग इसका अध्ययन कर सनातन धर्म धारण कर रहे है तथा अपना जीवन धन्य कर रहे है,कर चुके हैं तथा भविष्य में भी करेंगे। श्रील प्रभुपाद ऐसी घोषण पहले ही कर चुके है कि अगले दस हजार वर्षों तक इस्कॉन रहेगा तथा महाप्रभु कि भविष्यवाणी कि 'पृथ्वी पर जितने भी ग्राम हैं,सर्ववत प्रचलित होगा मेरा नाम' वास्तव में शत प्रतिशत प्रमाणित होगा। एशिया,नार्थ अमेरिका,अफ्रीका तक के अंचल से लेकर हर पाश्चात्य देशों सहित ऑस्ट्रेलिया जैसे वैभव सम्पन्न महादेशों से धन कुबेर तथा विभिन्न लोग आज प्रभुपाद के वचनामृत से अनुप्रेरित तथा उज्जीवित होकर हरिनाम भजन की शरण मे आ अपना जीवन धन्य कर रहे हैं तथा जीवन का सार्थक अर्थ पा सके हैं जबकि हम भारतीय अपने धर्म मे आस्था न कर सके तथा इसके आश्रय में न आ सके हैं । इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन शैली अपनाकर गर्वान्वित होने का प्रयास कर रहे हैं। आज जब पश्चिमी देश भारतीय सनातन धर्म को अपना रहे हैं वहीं हम भारतीय अपनी संस्कृति भूल खुद को पाश्चात्य संस्कृति में ढालने में लगे हुए हैं।

जरा सोचिए।

इस्कॉन केवल एक धार्मिक संस्थान ही नहीं है, प्रतिष्ठाता आचार्य श्रील प्रभुपाद द्वारा प्रतिष्ठित इस्कॉन एक ऐसा आश्रय है जहाँ केवल देह ही नहीं वरन भगवान के आशीर्वाद के आलोक में मानव मानसिकता की वेधशाला है जहाँ मनुष्य को पर्मार्थवादी जीवनयापन में सहायता करती है

स्वल्प परिचय में विस्तृत आलोचना संभव नहीं है तथा ऐसा करने का दुःसाहस या अपराधी भी नहीं बनना चाहता तथापि प्रभुपाद के उपदेशों के माध्यम से कुछ शिक्षा प्रदान करने की इच्छा है आग्रही लोगों को सादर आमंत्रित करता हूँ । भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा था कि श्रील भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने एक बहुमूल्य कर्तव्य का पालन किया है तथा मानव समाज की मुक्ति के लिये उनके रचित ग्रंथ समाज के लिये एक बहुमूल्य अवदान है।

चलते चलते श्रीमद्भागवत गीता के 18वे अध्याय के 68 वें श्लोक से समापन करूँगा

:य इदं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परं कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशय: ।।

अर्थात हमारे भक्तों में से जो इस परम गोपनीय यथा वाक्य का उपदेशन करते हैं वे अवश्य ही अंत मे मेरे पास वापस आएंगे।आइये हम सब भगवान के परम धाम में लौटने का प्रयास करें।

असीम कुमार दास
प्रवर श्रेणी लिपिक, शाखा कार्यालय, गरीफा

विषयासक्ति व अनासक्ति का अंतर्द्वंद्व

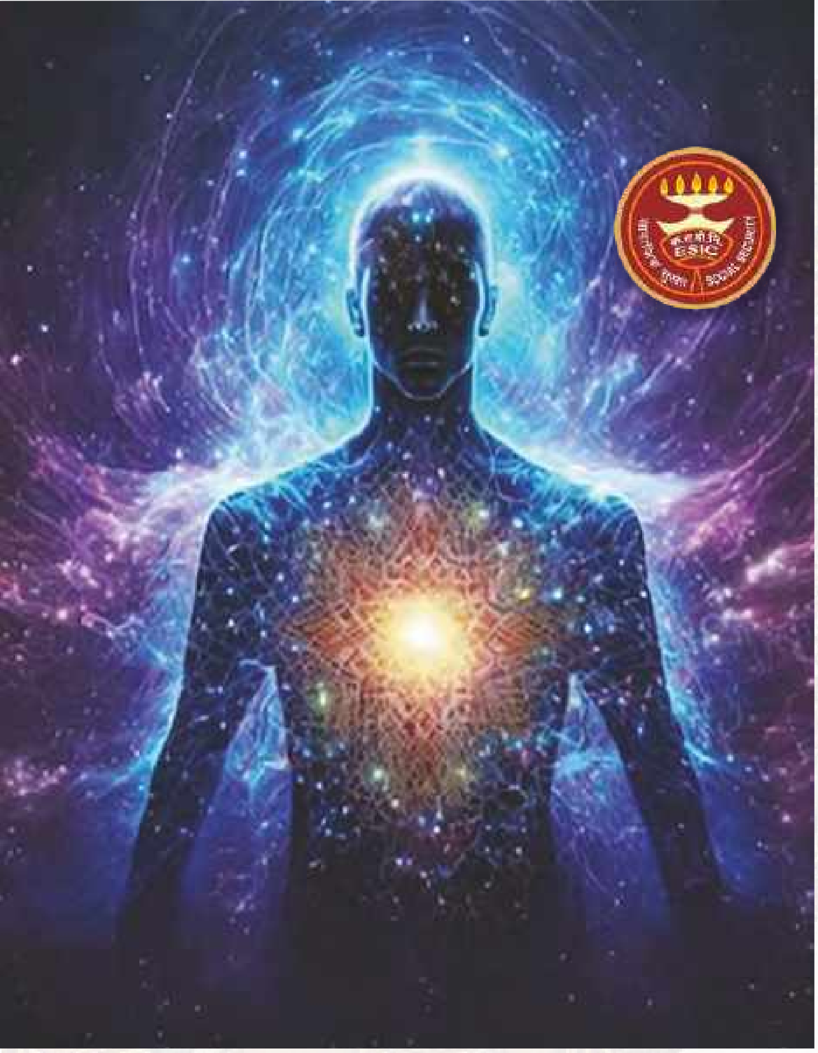

प्राणी के शरीर का एक अदृश्य अंग है 'मन'। यही पाखंडी मन मनुष्य को मैं(अहंकार) की मदिरा पीलाकर इतना मदहोश कर देता है कि मनुष्य जीवन भर माया-ममता, भोग-विलास और ऐंद्रिक सुख के मोह पाश में जकड़ा रहता है। आत्मा और शरीर के मध्य में मन का यह भ्रामक खेल इतना शक्तिशाली होता है कि मनुष्य अंतर्द्वंद्व के जाल में पक्षी की भाँति केवल फड़फड़ाता ही रह जाता है। इस जाल में फँसाने के लिए दाने के रूप में हमारी संस्कृति में कई सारे आकर्षण विद्यमान हैं जो विषयासक्ति के लिए निरंतर प्रेरणास्रोत का कार्य करते हैं।

विषयासक्ति का प्रेरणास्रोत

कार्ल मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद सिद्धांत के अस्तित्व में आने से करीब ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व ही प्राचीन भारतीय चार्वाक दर्शन में ही भौतिकवाद, सुखवाद और इहलौकिकता की प्रथम झलक प्राप्त होती है। यह दर्शन नास्तितका में डूबी कर्म और मोक्ष के सिद्धातों को खारिज करते हुए सांसारिक सुखों और भोग विलासों का समर्थन करते हुए कहती है-

"पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावतपतति भूतले।
उत्थाय च पुनः पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते।।"

(अर्थात् पियें और बार बार पियें जब तक जमीन पर न गिर जायें। उठकर फिर से पियें क्योंकि पुनर्जन्म नहीं होने वाला।)

पुनर्जन्म के विचारों से असहमत यह दर्शन सुख प्राप्ति के लिए हर सीमा को लाँघ देने का विचार प्रस्तुत करता है-

"यावत् जीवेत सुखं जीवेत ऋणं कृत्वा घृतं पीबेत,
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।"

(अर्थात् जब तक जीना है सुख से जीना चाहिए, अगर अपने पास साधन नहीं है तो दूसरे से उधार लेकर मौज करना चाहिए क्योंकि शमशान में शरीर के जलने के बाद शरीर को किसने वापस आते देखा है।)

अगर हम इतिहास में इस प्राचीन काल से आगे बढ़ें और हिंदी साहित्य के रीतिकाल पे नजर डालें तो हमें अनगिनत कवि और उनकी श्रृंगारयुक्त पंक्तियाँ दृष्टिगोचर होंगी जो वैभव-विलास के समस्त उपादानों में लिपटी कायिक प्रेम और भौतिक विषयाकर्षण की प्रेरणास्तंभ हैं। इनमें पहला नाम पद्माकर का है जिन्होंने लिखा है-

"गुलगुली गिल में गलीचा है, गुनीजन है,
चाँदनी है, चिक है, चिरागन की माला है।
कहै पद्माकर ज्यों गजक गिजा है सजी,
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।"

मनुष्य के मानस पटल पर नारी के दैहिक आकर्षण की लोलुपता को दुगना करने वाली बिहारी ने असंख्य कविताओं की रचना की जिनमें से एक अद्वितीय यहाँ प्रस्तुत है-

"अंग अंग नग जगमगति, दीपसिखा सी देह,
दिया बुझाय है रहौ, बड़ो उजेरो गेह।"

तत्कालीन वैमनस्य, असहिष्णुता और सांप्रदायिकता के रोष को शांत करने का जो अनूठा हल हरिवंश राय बच्चन ने अपनी प्रसिद्ध रचना मधुशाला मे दिया है वह तो विषयासक्ति को हवा देने में अपने शिखर पे है। उन्होने कहा है-

"मुसलमान और हिंदू हैं दो,
एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय
एक, मगर, उनकी हाला,
दोनों रहते एक, न जब तक
मस्जिद मंदिर में जाते,
बैर बढ़ाते मस्जिद मंदिर मेल कराती मधुशाला।"

गालिब़ ने तो भौतिकता की सारी हदें पार करते हुए लिखा है-

"शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर,
या वो जगह बता जहाँ ख़ुदा नहीं।"

उक्त सारी पँक्तियाँ इतने मान्य और लोक समर्थित हैं कि एक आम मनुष्य के लिए यह निर्णय कर पाना दुष्कर है कि खुद को आखिरी साँस तक इन्हीं विचारों या धारणाओं के हवाले किए रखना है अथवा किसी दूसरे मार्ग या विकल्प की ओर भी रूख करना है।

हमारी उर्वर भारतीय संस्कृति और परंपरा सनातनी उच्च विचारों और सम्यक उपदेशों से इतनी भरी पड़ी है कि दूसरा विकल्प तलाशना बिल्कुल ही सहज, सरल और सुगम है। अगर कुछ मुश्किल है तो खोखली ऐंद्रिक विषयों को त्यागकर संयम अपनाना, मन को अपने अधीन करना और वास्तविक लक्ष्य के मार्ग पर अग्रसर होना। प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन का आधार आत्मा है जो सदैव यही कामना करता है कि मानव मिथ्या भोग-विलास एवं काम की तृष्णा तथा इसके भ्रम से बाहर आए। परंतु अंतर्द्वंद्व तो इसी आत्मा और मन के मध्य है। सवाल यह है कि मन को काबू में करने और विषयों से अनासक्ति हेतु कैसे जाग्रित हों। तो आइए इन विचारों को भी अपनी भारतीय संस्कृति में ही ढूंढ़ते हैं।

विषयों के प्रति अनासक्ति

वाणी के डिक्टेटर और अदम्य साहस तथा सामाजिक ताने-बाने में समरसता घोलने वाले निर्गुण राम भक्त कवि कबीर के अनगिनत दोहे विषयासक्ति को दूर रखने और मन को काबू में रखने के उपदेश देने वाले हैं। इनमें से कुछ निम्नांकित हैं-

"मन के मते न चलिए, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधु कोई एक।।"

(अर्थात् मन के अनेकों मत हैं जो सदैव हमें कुमार्ग पर जाने को प्रेरित कर सकते हैं। अतः मन का दास नहीं स्वामी बनना है। वह साधु कोई विरला ही होता है जो मन को अपने अधीन रखता है।)

"माया मरी न मन मरा, मर-मर गया शरीर।
आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर।।"

(अर्थात् न मनुष्य का मन तथा उसमें घुसी हुई माया का नाश होता है और न ही उसकी आशा तथा इच्छाओं का अंत होता है केवल दिखने वाला शरीर मरता है। यही कारण है कि मनुष्य दुख रूपी समुद्र में सदा गोते खाता रहता है।)

"मन पंछी तब लग उड़ै, विषय वासना माहिं।
ज्ञान बाज के झपट में, तब लगि आवै नाहिं।"

(अर्थात् यह मन रूपी पक्षी विषय-वासनाओं में तभी तक उड़ता है, जब तक ज्ञान रूपी बाज के चंगुल में नहीं आता यानि कि ज्ञान प्राप्त हो जाने पर मन विषयों की तरफ नहीं जाता।)

परंतु अंतर्द्वंद्व का असल कारण अधूरा ज्ञान ही है जो दो धारी तलवार का कार्य करता है यह ज्ञान लेने और देने वाले दोनों को घायल कर सकता है। इस अधूरे ज्ञान के भ्रम से उबर जाने और वास्तविक मंजिल के दर्शन हो जाने के उपरांत श्रीरामचरितमानस जैसे अद्वितीय माहाकाव्य के रचयिता महाकवि श्री तुलसीदास जी अपनी एक अन्य कृति विनय पत्रिका में उद्धृत किया है-

"अबलौ नसानी, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव-निसा सिराणी, जागे फिरि न डसैहौं।।
पायेऊँ नाम चारू चिंतामनि, ऊर कर तें न खसैहौं।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं।"

(अर्थात् अब तक तो यह आयु व्यर्थ ही नष्ट हो गयी, परंतु अब इसे नष्ट नहीं होने दूँगा। श्री राम की कृपा से संसार रूपी रात्रि बीत गई है, अब जागने पर फिर माया का बिछौना नहीं बिछाउँगा। मुझे राम-नाम रूपी सुंदर चिंतामणि मिल गई है। उसे हृदय रूपी हाथ से कभी गिरने नहीं दूँगा। श्री रघुनाथ जी का जो पवित्र श्याम सुंदर रूप है उसकी कसौटी बनाकर अपने चित्तरूपी सोने को कसूँगा। जब तक मैं इंद्रियों के वश में था, तब तक उन्होंने मुझे मनमाना नाच नचाकर मेरी बड़ी हँसी उड़ाई , परंतु अब स्वतंत्र होने पर यानि मन-इंद्रियों के जीत लेने पर उनसे अपनी हँसी नहीं कराउँगा। अब तो अपने मन रूपी भ्रमर को प्रण करके श्री रामजी के चरण-कमलों में लगा दूँगा।

इस संदर्भ में अर्थात् विषयों से अनासक्ति, मन का स्वामी और जितेंद्रिय बनने का बेजोड़, अनूठा व गूढ़ रहस्य हिंदू सनातन धर्म के सर्वमान्य, पवित्र और सुविख्यात ग्रंथ श्रीमद्भागवत गीता के हर पृष्ठ पर मिल जाएँगे। अगर हम इसके कवर पेज पर भी सूक्ष्म दृष्टि डालें तो उसपर जो चित्र अंकित है उसमें रथ शरीर, सवार सारथी श्रीकृष्ण मन, स्वामी अर्जुन आत्मा और इस रथ में जुते घोड़े इंद्रियों को इंगित करते हैं।

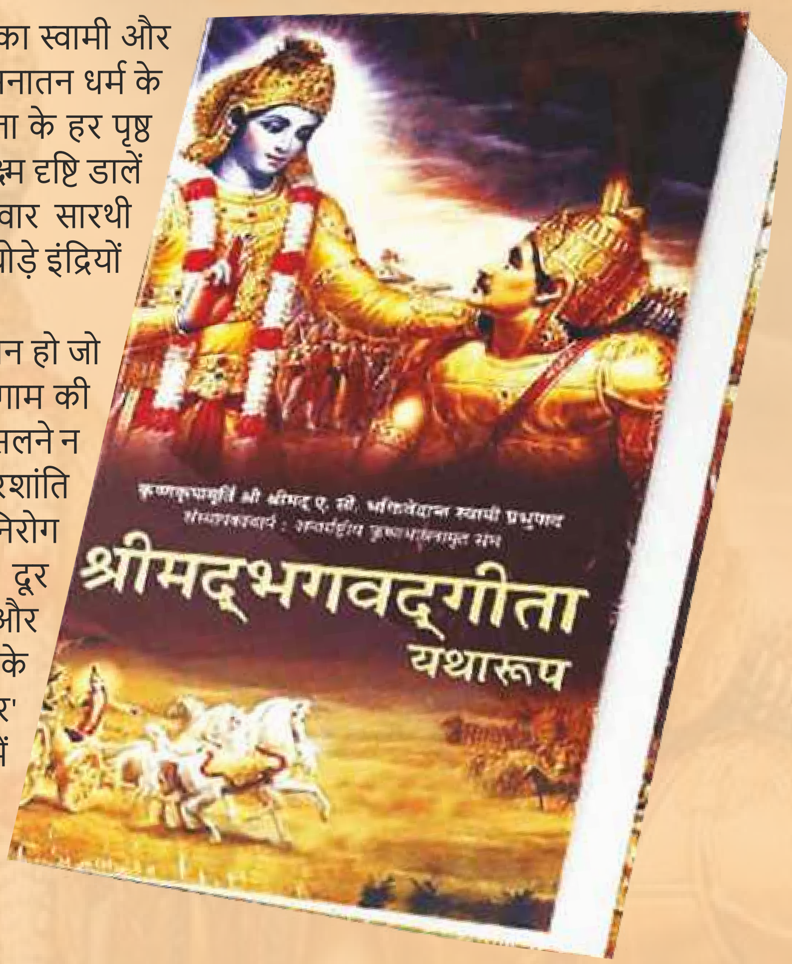

अगर हमारे पास श्रीकृष्ण की भाँति सधा हुआ मन हो जो इंद्रियों के बहकावे में आने के बजाय उसपे अपनी लगाम की मजबूत पकड़ की बागडोर अपने हाथों से कभी भी फिसलने न दे तब ही हमारी आत्मा परमानंद की अनुभूति और चिरशांति का अहसास कर पाएगा और यह रथ रूपी शरीर भी निरोग और हृष्ट-पुष्ट बना रहेगा। और अंतर्द्वंद्व हमसे कोसों दूर रहेगी। अंतिम संदेश यह कि इन सारी दुविधाओं और अंतर्द्वंद्वों की जड़ असीम इच्छाएँ ही है जिसके शमन के लिए 'सादा जीवन उच्च विचार' की परिकल्पना को जीवन में साकारित करना होगा और तब ही इस मानव जीवन के सच्चे उद्देश्य को हासिल किया जा सकता है।

भीमसेन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक, वित्त एवं लेखा शाखा

■ ■ ■

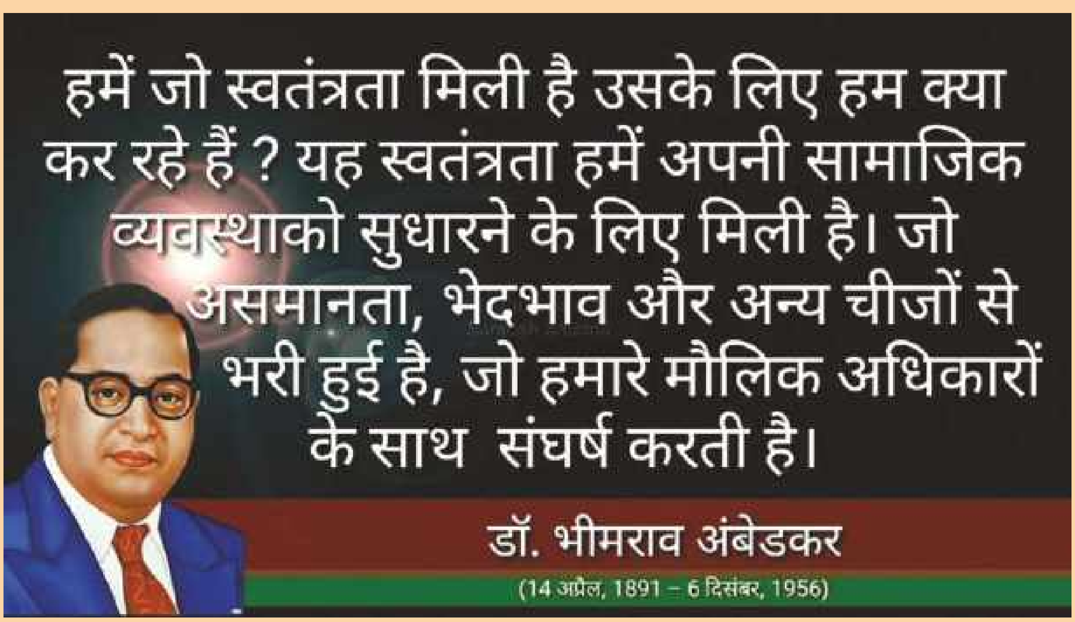

त्रिभाषा सूत्र

संकलित- राजभाषा शाखा

त्रिभाषा सूत्र (Tribhasha Sutra-three language formula) को हम भारत सरकार की भाषा नीति का ही एक भाग कह सकते हैं। त्रिभाषा सूत्र का तात्पर्य हिन्दी भाषी एवं गैर-हिन्दी भाषी राज्यों में भाषा अध्ययन की व्यवस्था से है। त्रिभाषा सूत्र को राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग) ने वर्ष 1968 की नीति में उल्लिखित किया था जो इस प्रकार है:-

(1) पहली भाषा- अध्ययन की जाने वाली पहली भाषा मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा

(2) दूसरी भाषा - हिन्दी भाषी राज्य- कोई अन्य आधुनिक भारतीय भाषा या अंग्रेजी

गैर-हिंदी भाषी राज्य- हिंदी या अंग्रेजी होगी

(3) तीसरी भाषा- हिंदी भाषी राज्य- तीसरी भाषा अंग्रेजी या कोई आधुनिक भारतीय भाषा

(जो दूसरी भाषा के रुप में न लिया गया हो)

गैर-हिंदी भाषी राज्य- तीसरी भाषा अंग्रेजी या कोई आधुनिक भारतीय भाषा

(जो दूसरी भाषा के रुप में न लिया गया हो)

चूंकि त्रिभाषा सूत्र का संबंध कोठारी आयोग की सिफारिश से जुड़ा हुआ है अतः इस संबंध में कोठारी आयोग की संक्षिप्त जानकारी आवश्यक है-

कोठारी आयोग (1964-1966):

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग को ही कोठारी आयोग के नाम से जाना जाता है। इसकी अध्यक्षता दौलत सिंह कोठारी ने की थी, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के भी अध्यक्ष थे, इसीलिए इसे कोठारी आयोग के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत सरकार द्वारा भारत में शैक्षिक क्षेत्र के सभी पहलुओं की जांच करने एवं सलाह देने के लिए एक सर्वोच्च आयोग था।

कोठारी आयोग ने ही सिफ़ारिश की थी कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा अथवा दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक के अध्ययन की व्यवस्था एवं अहिंदी भाषी राज्यों में राज्य भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की जाए। इसी व्यवस्था को त्रिभाषा सूत्र के नाम से जाना जाता है।

राजभाषा संकल्प 1968

कोठारी आयोग की सिफ़ारिशों को कार्यान्वित करने के लिए संसद द्वारा एक संकल्प पारित किया गया जिसे राजभाषा संकल्प 1968 के नाम से जाना जाता है।

संकल्प का सार यह है कि देश एकता एवं अखंडता की भावना को बनाए रखने एवं देश के विभिन्न भागों में जनता में संपर्क सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णतः कार्यान्वित किया जाएगा।

अतः संकल्प पारित किया गया कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा अथवा दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक के अध्ययन की व्यवस्था एवं अहिंदी भाषी राज्यों में राज्य भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था हो।

नई शिक्षा नीति, 2020 में त्रिभाषा सूत्र

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में सरकार द्वारा एक समिति का गठन किया गया था। चूंकि त्रिभाषा सूत्र को पूरी तरह व्यावहारिक तौर पर लागू नहीं किया जा सका। नई शिक्षा नीति में भी इस बात का उल्लेख किया गया कि उपर्युक्त त्रिभाषा सूत्र को लागू किया जाएगा। इस पर कई राज्यों ने आपत्ति भी जताई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार,-

1. मातृभाषा या स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा-इसमें कहा गया है कि ग्रेड 5 तक शिक्षा का माध्यम घर या स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा या कम से कम मातृभाषा होगी जिसे 8 वीं कक्षा या उससे आगे तक बढ़ाया जा सकता है।
2. भारत की 2 भाषाओं का अध्ययन -छात्र को तीन भाषाओं में से 2 भारतीय भाषाओं का अध्ययन करना होगा।
3. त्रिभाषा सूत्र को लागू करते समय राज्य, आम जनता, लोगों की आकांक्षाओं का ध्यान रखा जाएगा। किसी भी राज्य पर कोई भाषा नहीं थोपी जाएगी।
4. राज्य, भारत का कोई भी क्षेत्र और यहाँ तक छात्र भी तीन भाषाओं को चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।
5. ग्रेड 6 या 7 में पढ़ने वाले छात्र उन तीन भाषाओं में से किसी एक या अधिक को बदल सकते हैं।
6. इससे बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा।
7. ऐसी कोई विशिष्ट भाषा नहीं है जो किसी भी राज्य पर थोपी जाए। यह राज्य को तय करना है कि उनकी पसंद की भाषा कौन सी है।

शिक्षा के संबंध में संविधान क्या कहता है :-

अनुच्छेद 347 के अनुसार अगर राज्य की जनसंख्या का कोई भाग चाहता है तो राष्ट्रपति के आदेश द्वारा ऐसा किया जा सकता है। ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में शासन की मान्यता दी जा सकती है।

अनुच्छेद 350 के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति संघ या राज्य के किसी अधिकारी या प्राधिकारी को, यथास्थिति, संघ में या राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में आवेदन दे सकता है।

अनुच्छेद 350 ए. के अनुसार भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करना राज्य सरकार का दायित्व होगा।

भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए विशेष अधिकारी--

अनुच्छेद 350 बी के अनुसार भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त एक विशेष अधिकारी होगा।विशेष अधिकारी का यह कर्तव्य होगा कि वह इस संविधान के अधीन भाषाई अल्पसंख्यक-वर्गों के लिए सभी विषयों पर अनुसंधान करे एवं इस संबंध में अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को दे।

प्रशासनिक शब्दावली

संकलित- राजभाषा शाखा

1.	Ability	योग्यता
2.	Ab initio	आरंभ से
3.	Acceptable	स्वीकार्य
4.	Accommodation	आवास, निर्वाह
5.	Accordance	अनुरूपता, संगति
6.	Accountant	लेखाकार
7.	Adjourn	स्थगित करना, काम रोकना
8.	Addressee	पाने वाला, प्रेषिती
9.	Adhere to	पर दृढ़ रहना, पर जमे रहना
10.	Adequate	पर्याप्त
11.	Backdated	पूर्व-दिनांकित
12.	Balance	शेष, संतुलन
13.	Ballot Box	मत पेटी
14.	Ban	प्रतिबंध, रोक, पाबंदी
15.	Basic	मूल, बुनियादी
16.	Basic Pay	मूल वेतन
17.	Beneficiary	लाभार्थी, हितभागी
18.	Benevolence	हितकारिता
19.	Bilateral	द्विपक्षीय
20.	Bill	विधेयक, बिल
21.	Cadre	संवर्ग, काडर
22.	Calculation	परिकलन
23.	Campaign	अभियान
24.	Campus	परिसर
25.	Cancel	रद्द करना
26.	Capability	सामर्थ्य
27.	Case	मामला, विषय, स्थिति, प्रकरण, मुकदमा
28.	Cash	नकद, नकदी, रोकड़
29.	Cess	उपकर
30.	Chairmanship	अध्यक्षता
31.	Daily Allowance	दैनिक भत्ता
32.	Data analysis	आंकड़ा विश्लेषण
33.	Day to day work	दैनंदिन कार्य, रोज़मर्रा का कार्य
34.	Dealing Assistant	संबंधित सहायक
35.	Dearness Allowance	महंगाई भत्ता
36.	Debarment	रोक, विवर्जन, वारण
37.	Decorum	शिष्टता, शालीनता, मर्यादा
38.	Dedication	समर्पण
39.	Deduction	कटौती, घटाव
40.	Decision	निर्णय, फैसला, विनिश्चय (विधि)
41.	Earned Leave	अर्जित अवकाश, अर्जित छुट्टी
42.	Earning	उपार्जन, अर्जन
43.	Economic	आर्थिक, अर्थशास्त्रीय
44.	Edition	संस्करण
45.	Editorial	संपादकीय
46.	Effective	प्रभावी, वास्तविक
47.	Election	निर्वाचन
48.	Eligibility	पात्रता
49.	Embassy	राजदूतावास
50.	Empanelled Officer	नामिकागत अधिकारी

राजू दास, आशुलिपिक, आंचलिक प्रशिक्षण संस्थान (पूर्वी क्षेत्र)

ईएसआईसी
सामाजिक सुरक्षा हितलाभ योजना

चिकित्सा हितलाभ

बीमारी हितलाभ

मातृत्व हितलाभ

सत्यमेव जयते

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

नि:शक्तता हितलाभ

आश्रितजन हितलाभ

अन्य नकद हितलाभ
(अंत्येष्टि व्यय, प्रसूति व्यय इत्यादि)

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पर विज़िट करें

www.esic.gov.in

@esichq

@esichq

@esichq

@esichq

@esichq

@esichq

@esichq

QR कोड स्कैन करें